ज्ञानामृत

मई, 1983
वर्ष 18 ❋ अंक 11
मूल्य 1.25

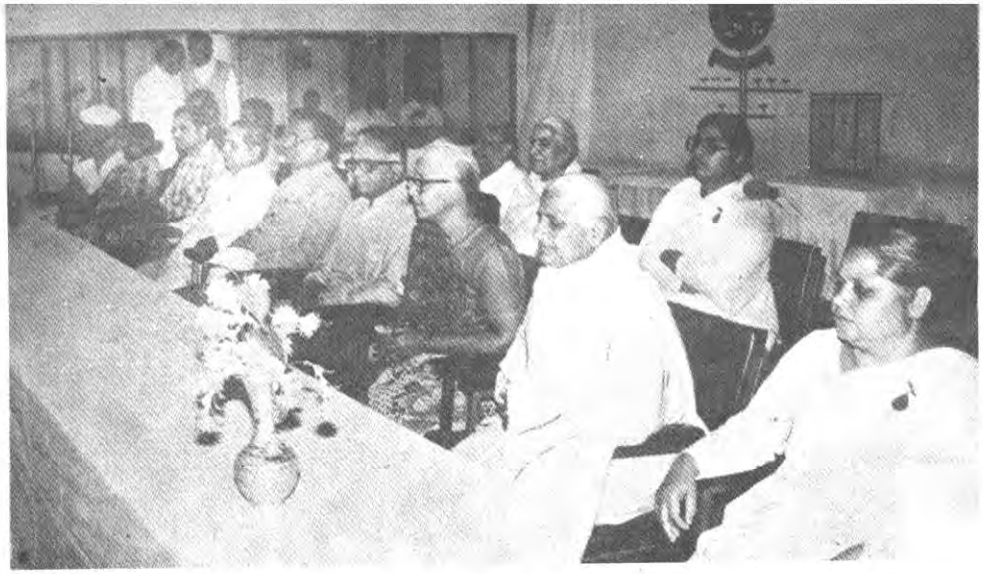

10 अप्रैल 1983 को राजस्थान के मुख्य मन्त्री भ्राता शिवचरण माथुर, अखिल भारतीय कांग्रेस (ई) की महासचिव बहन राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी, तथा अन्य महानुभाव पांण्डव भवन, माऊँट आबू में पधारे। युनिवर्सल पीस हाल के मंच पर दादी प्रकाश मणि जी तथा अन्य सर्व योग मुद्रा में बैठे हैं।

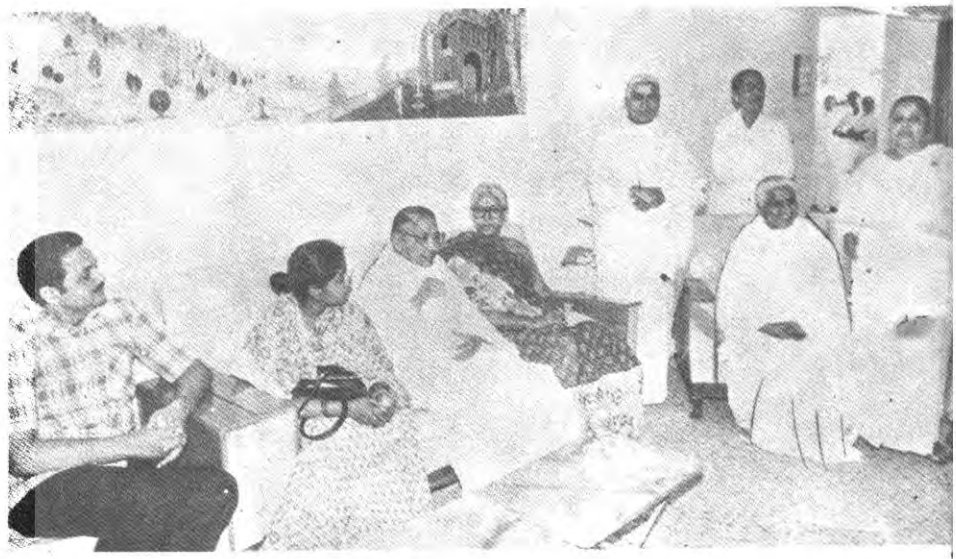

चित्र में बहिन राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी तथा सिरोही के राज-कुमार दीदी मनमोहिनी जी तथा दादी प्रकाशमणि जी से ओमशान्ति भवन, आबू पर्वत पर मिलते हुए।

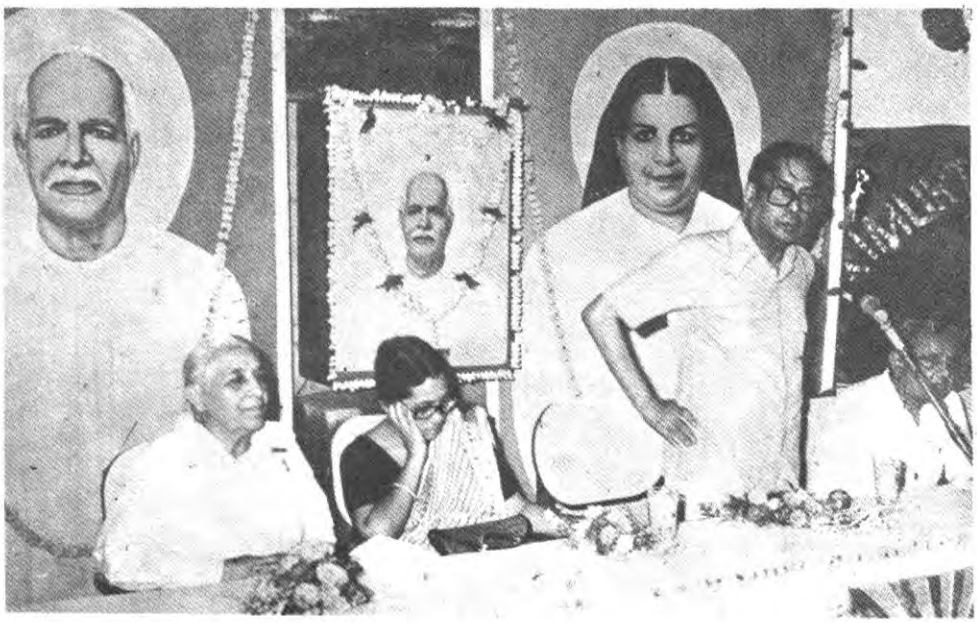

13 मार्च 1983 को कलकत्ता में आयोजित शिवरात्रि महोत्सव में मंच पर विराजमान हैं (बाएं से) ब्र० कु० दादी निर्मलशान्ता जी, बहन बासू जी, कलकत्ता उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश भ्राता तरुन कुमार बासू जी तथा रमेश भट्ट।

ब्र० कु० लता तथा सुसन वनकोवर (केनेडा) में प्रसिद्ध फ़िल्म "गांधी" के उद्घाटन अवसर पर, गांधी फ़िल्म के प्रोड्यूसर, डारैक्टर भ्राता सर रिचर्ड एटनबोरोह को ईश्वरीय सन्देश देते हुए।

कीन्या के हाई कमिश्नर भ्राता एस० ओ० मगोटो, साऊथ एक्स-टैन्शन, नई दिल्ली सेवा केन्द्र पर पधारे। ब्र० कु० शान्ति तथा ब्र० कु० दादा गोपाल जी साथ में खड़े हैं।

भ्राता रंगानाथ मिश्रा भारत के उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश नियुक्त होने पर ब्र० कु० कमलेश, कटक में उन्हें चन्दन का टीका देते हुए।

ब्र० कु० गायत्री (न्यूयार्क) गाज़ियाबाद के ज़िलाधीश भ्राता के० एन० सिंह को ईश्वरीय सन्देश देते हुए। ब्र० कु० सतीश, राजेश, सरोज शर्मा तथा अन्य साथ में हैं।

डा० गिरीश के आगमन पर वारंगल बार-एसोसिएशन द्वारा आयोजित प्रवचन कार्यक्रम में बार-एसोसिएशन के प्रधान भ्राता रामचन्द्र जी राव भाषण करते हुए। डा० गिरीश पटेल तथा वहां के सेशन जज साथ में बैठे हैं।

Regd. No. 10563/65-D (E)—70

सिरसी में कर्नाटक के मुख्य मन्त्री भ्राता श्रीराम हेगड़े को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद, ब्र० कु० गायत्री, ब्र० कु० बलवन्त, श्रीराम कृष्ण हेगड़े, उनकी धर्मपत्नी तथा अन्य भाई बहिन खड़े हैं।

चित्र में ब्र० कु० मोहिनी तथा ब्र० कु० आशा कांग्रेस (ई) की महासचिव बहिन राजेन्द्रकुमारी बाजपेयी को प्रसाद देती हुईं।

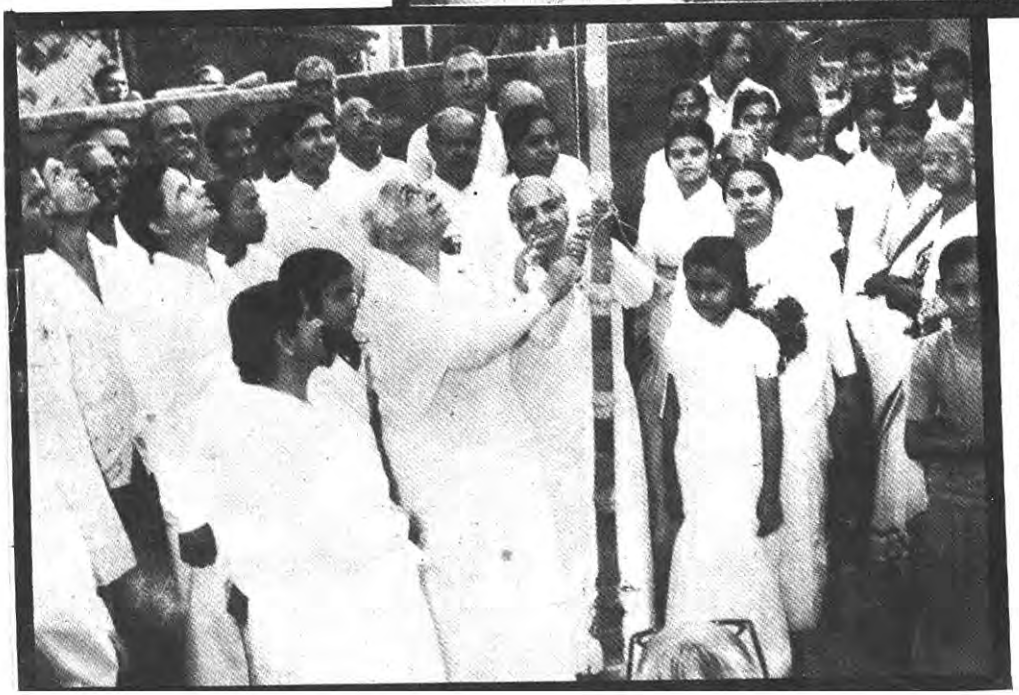

कोननगर में दादी निर्मल शान्ता जी तथा ब्र० कु० सन्तरी जी शिव बाबा का ध्वज लहराते हुए। सा में कानन बहिन, रमेश भाई सौभाग्य बहिन तथा अन्य भाई बहिन खड़े हैं।

अमृत-सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ	क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	हमारे बोल (सम्पादकीय)	२	९.	ईश्वरीय समाचार	२०
२.	सतयुग और शासन-व्यवस्था अर्थ घोषणा-पत्र	६	१०.	मंगल गान (कविता)	२१
३.	अद्भुत चमत्कार	१०	११.	विश्व देखे तेरी तरफ—तू क्यों न देखो उसकी तरफ	२२
४.	वक्त की पुकार	१२	१२.	ओम शान्ति का सन्देश (कविता)	२३
५.	विमान क्यों नहीं आया ?	१३	१३.	सचित्र समाचार	२४
६.	समाचार चित्रों में	१५	१४.	पवित्रता की रक्षा	२५
७.	भटकता मन और राजयोग	१६	१५.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	३०
८.	माउण्ट आबू में पीस पार्क	१९			

खुशखबरी

प्रिय बहिनो तथा भाइयो !

यह जानकर आपको प्रसन्नता होगी कि ज्ञानामृत और वर्ल्डरीन्युवल पत्रिकाओं से ईश्वरीय सेवा में सहयोग कैसे हो उसके लिये यह निर्धारित किया गया है कि जो सेवाकेन्द्र जितनी पत्रिकाएं पहले मंगाता है उससे जितनी **अतिरिक्त** और बढ़ाएगा, उन हर २ **अतिरिक्त** पत्रिकाओं पर १ पत्रिका निःशुल्क भेजी जावेगी। मानो आप अपने सेवाकेन्द्र पर ३० पत्रिकाएं मंगाते हैं, अभी आप बढ़ाकर ४० करते हैं, तो ५ पत्रिकाएं ईश्वरीय सेवा अर्थ निःशुल्क भेजी जावेंगी। आशा है आप इससे पूरा लाभ उठाएंगे और हमें भी प्रोत्साहन देंगे।

ज्ञानामृत, वर्ल्डरीन्युवल के विषय में निम्न बातें ध्यान पर रखें

१. ज्ञानामृत, वर्ल्डरीन्युवल का वार्षिक शुल्क	१६ रुपये
२. ज्ञानामृत, वर्ल्डरीन्युवल का अर्द्धवार्षिक शुल्क	९ रुपये
३. एक प्रति का मूल्य	१·५० रुपये
४. विदेशों के लिये प्रति कापी	९० रुपये

इन पत्रिकाओं का नया वर्ष जुलाई अंक से प्रारम्भ होगा।

कृपया आप ज्ञानामृत और वर्ल्डरीन्युवल के सदस्यों की संख्या शीघ्र अतिशीघ्र भेजें। यदि आप ७ मई तक संख्या भेज देंगे तो हमें सुविधा होगी।

कृपया मनीआर्डर, ड्राफ़्ट इत्यादि केवल निम्न नाम और पते पर भेजें।

ज्ञानामृत

बी 9/19 कृष्णा नगर, दिल्ली-110051

दूरभाष : 213741

प्रकाशन सम्बन्धी विवरण

१. प्रकाशन स्थान	देहली	५. मुद्रक तथा प्रकाशक का नाम	ब्र० कु० आत्मप्रकाश
२. प्रकाशन अवधि	मासिक	६. पता	बी ९/१९ कृष्णानगर दिल्ली-५१
३. मुख्य-सम्पादक का नाम	जगदीश चन्द्र हसीजा	७. क्या भारत का नागरिक है ?	हाँ
४. पता	१९/१७ शक्तिनगर, देहली-७	८. सम्पादक का नाम	ब्र० कु० आत्मप्रकाश
		९. पता	वही

सम्पादकीय

हमारे बोल

आम तौर पर हम लोगों को यह कहते हुए सुनते हैं कि किसी सार्वजनिक सभा में भाषण करना एक कला है—Public speaking is an art. परन्तु यदि देखा जाय तो केवल भाषण ही नहीं, बात करना भी एक कला है। कुछ लोग बात को ऐसा प्रभावशाली, रोचक, विनोद-युक्त तथा युक्तियुक्त बना देते हैं कि सुनने वाला और अधिक सुनना चाहता है अथवा प्रभावित हो जाता है और दूसरे कई उसी बात को निस्तेज, शुष्क एवं सारहीन ढंग से कहते हैं कि सुनने वाले जमाई लेने लगते हैं, ऊंघने लगते हैं या तो 'बोरिंग (Boring) समझ कर अपने आसन को छोड़ चले जाते हैं। कुछ लोग बात मनवा लेते हैं, अन्य अपनी सही और न्याय-संगत बात को भी ओजस्वी, सारगर्भित या विचारोत्पादक तरीके से नहीं रख पाते।

बात करने के ढंग में अन्य दृष्टिकोण से भी अन्तर होता है। परन्तु हम यहां भाषण कला (Oratory) या वकालत (Pleading or Advocacy) की चर्चा नहीं कर रहे; हम तो वाक्कला को आध्यात्मिक दृष्टिकोण से जानना चाहते हैं। आप देखते हैं कि कुछ लोग तो ऐसे तरीके से बात करते हैं कि दूसरा व्यक्ति अज्ञान-निद्रा को छोड़ कर या किसी बुरी आदत को छोड़कर अपना जीवन ही पलट देता है और कुछ लोग ऐसी बात करते हैं कि दूसरे के मन में फफोले पैदा कर देता है अथवा आग लगा देता है। बात करने का ढंग ऐसा भी हो सकता है कि सुनने वाले के मन में शान्ति आ जाये और दो व्यक्तियों के बीच झगड़ा मिट जाये और बात ऐसे तरीके से भी हो सकती है कि उक्साहट पैदा हो। अतः हम इस बात पर विचार करना चाहते हैं कि बात कैसे की जाए ताकि यह कला हमारे लिये 'चढ़ती कला' का साधन बन जाए।

सर्वेक्षण करने पर आप इस परिणाम पर पहुंचेंगे कि बात या बात के विषय, या अवसर प्रायः सोलह प्रकार के होते हैं। बाबा ने इन पर प्रकाश डाला है। यदि हम बाबा के महावाक्यों पर ध्यान दें तो हम अपना तथा दूसरों का कल्याण करने के निमित्त बन सकते हैं। हम यहां संक्षेप से कुछेक पर चर्चा करेंगे—

१. चर्चा-परिचर्चा

बात या वार्तालाप के एक रूप को **'चर्चा'** कहते हैं। राजनीतिक, सामाजिक, घरेलू किसी भी बात को लेकर अपने किसी मित्र, पड़ोसी इत्यादि से हम प्रायः चर्चा छेड़ देते हैं। जब दो व्यक्ति मिलते हैं तब वे सोचते हैं कि आपस में कुछ तो बात करनी ही चाहिये। परन्तु बाबा ने समझाया है कि इस जीवन के श्वास अनमोल हैं; चर्चा ऐसी करो जिस से उन्नति हो। पानी में मथनी मारने से तो मक्खन निकलेगा नहीं, बल्कि समय व्यर्थ ही जाएगा। अतः चर्चा का विषय और लक्ष्य ऐसा हो जिस से कुछ लाभ हो, अवस्था कुछ ऊंची उठे। व्यर्थ उधेड़-बुन तो निकम्मे ही व्यक्ति करते हैं। हमें तो विश्व के कल्याण की सेवा करनी है, हमारे पास फ़ालतू समय कहाँ है? अतः रूह-रूहानियत की बातें करनी चाहिये और हंस की तरह क्षीर ले, नीर को छोड़ देना चाहिए। बाबा ने एक 'मुरली' में कहा है कि कई बार जब आपस में बातें करते दो व्यक्तियों से पूछते हैं—"क्या कर रहे हो?", तो वे कहते हैं—"ऐसे ही बातें कर रहे हैं!" परन्तु वास्तव में "ऐसे ही" बातें करने का क्या भाव है? बात तो किसी अच्छे प्रयोजन ही से करनी चाहिये। हमारी बात ऐसी हो कि मोती झरें, हमारे बोल ऐसे हों कि पुष्पों की तरह कोमल तथा सुगन्धित करने वाले हों, हमारी चर्चा का विषय उन्नति कारक हो।

२. सलाह-विमर्श-सुझाव

कई बार हम इसलिए बोलते हैं कि हमारे पास बैठा व्यक्ति हम से कोई राय मांगता है, सलाह

करना चाहता है अथवा किसी समस्या का हल पूछता है। इस अवसर पर हमें चाहिये कि हम ब्रह्मा बाबा के जीवन को सामने रखें, स्वयं को भी शिव बाबा से योग-युक्त करके अच्छी स्थिति में स्थित हों ताकि हम ठीक सलाह दे सकें वरना दूसरे व्यक्ति के गुमराह या भ्रान्त होने की संभावना है। हम साक्षी अवस्था में टिककर, श्रीमत के आधार पर विश्व-कल्याण ही के भाव से उसे राय दें और बड़ी ज़िम्मेवारी से तोल-तोल कर बात करें, वरना उसे मार्ग-विमुख करने का पाप हमारे सिर पर चढ़ेगा। हमें अपने मत की बजाय उसे ईश्वरीय मत, दैवी या ब्राह्मण कुल की मर्यादा ही बताने के भाव से बोलना चाहिये।

३. समाचार

कुछ व्यक्ति इकट्ठे होते हैं तो एक-दूसरे से कहते हैं—सुनाओ भाई, क्या समाचार है? कोई नई-ताज़ी बात बताओ? आजकल क्या कर रहे हो, क्या चल रहा है? वह इस बात को लेकर समाचार सुनाना शुरू कर देता है। किसी ने मन को कोई चोट लगाई होती है या और ऐसा कोई किस्सा हो ता है तो वह भी 'समाचार' शीर्षक के अन्तर्गत आ जाता है। ऐसे समाचार से न तो सुनने वाले की उन्नति होती है, न सुनाने वाले को ही कोई लाभ होता है। सुनने वाला और लोगों को बताता है तो मनमुटाव होता है और वातावरण बिगड़ता है और सुनाने वाले के भी मन को टेर ही पड़ती है, दूसरा कोई लाभ तो होता नहीं। अतः समाचार ऐसा ही सुनाना चाहिये, जिससे कि दूसरे का पुरुषार्थ तीव्र हो, उसे प्रेरणा मिले, नैतिकता में उसकी भावना बढ़े और उसे खुशी मिले।

४. भाषण

यदि हम भाषण, प्रवचन, परिसंवाद आदि के रूप में बात करते हैं तो उसमें हमें रूहानियत-भरी शिव बाबा की बातें ही अधिक कहनी चाहिये क्योंकि सबसे श्रेष्ठ बातें, जो संसार में अन्य न किसी को मालम हैं और न कोई सुनाता है, तो शिव बाबा द्वारा ही बताई गयी हैं। उन्हीं बातों से ही कल्याण भी होने वाला है, और तो सब 'लबार' है। हाँ, बात को जिस प्रकार के व्यक्ति के सामने रखना हो और जैसा मौका हो वैसे तरीके से तो कहना पड़ता है परन्तु बात तो हमें ईश्वरीय ज्ञान ही की करनी चाहिये। हमें शिव बाबा का परिचय, संगम युग की सूचना, आदि-आदि तो स्पष्ट रूप में बताना ही चाहिये।

प्रश्न-उत्तर

हमारी बात का एक रूप प्रश्न-उत्तर भी हुआ करता है। हम या तो कोई बात किसी से पूछते हैं और या कोई हम से प्रश्न करता है तो उसे हम उत्तर देते हैं। हमारा पहला प्रयास यह होना चाहिये कि हम अपने प्रश्न ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर स्वयं हल करें। इसलिये प्रश्न करने या पूछने की आदत के बारे में तो बाबा ने कह ही दिया है कि अब **'पूँछ निकाल दो'** क्योंकि ईश्वरीय ज्ञान के सार तथा विस्तार को हमने जान ही लिया है। बाबा ने हमें जो विस्तृत ज्ञान दिया है, वह हमारे सभी प्रश्नों को हल करने में समर्थ है। तो भी यदि कोई प्रश्न बना रहता हो, उसका हल हम योग-स्थिति में प्राप्त कर सकते हैं। इसलिए बाबा कहते हैं कि अधिक पूछने से क्या लाभ; "मन्मना भव!" मन को शिव बाबा में लगायेंगे, और प्रतिदिन मुरली सुनेंगे तो प्रश्नों का ठीक उत्तर अवश्य मिलता ही जायेगा। **यदि हम किसी के प्रश्न का उत्तर देते हैं तो वह प्रश्न उसे 'प्रसन्न' करने वाला हो—ऐसा हमारा उत्तर हो।** वह प्रश्न और उसका उत्तर उसके जीवन को पवित्रता एवं योग के मार्ग पर लगा कर सदा के लिए उसे प्रसन्न-चित्त बना दे।

६. अनुभव सुनाना

कई बार हमारी बातचीत अनुभव के विषय में होती है। कोई हम से अनुभव सुनाने के लिये प्रस्ताव करता है या हम ही किसी से इस विषय पर बोलने लगते हैं। हमें अनुभव ऐसे सुनाने चाहिए

जिनसे सुनने वाले को बल मिले और वह भी चढ़ती कला वाला हो जाय। अपनी कमज़ोरी का अनुभव, जिससे किसी के मन को बीमारी लग जाय, सुनाने से क्या लाभ ? हरेक मनुष्य का जीवन अनमोल है; अत: उसे जीवन के लक्ष्य पर पहुंचने का ही अनुभव सुनाना चाहिये, न कि ऐसा अनुभव जिससे कि उसमें आलस्य, कमज़ोरी या कोई अवगुण आये।

७. परिचय देना

कुछ लोग जब हमारा परिचय पूछते हैं तो उसी विषय पर बात शुरू होती है। ऐसे अवसर पर हमें लौकिक परिचय के साथ-साथ अपना अलौकिक तथा पारलौकिक परिचय भी देना चाहिये या दूसरे का लौकिक परिचय सुनने पर उसे अलौकिकता में स्थित करने वाली बातें भी सुनानी चाहियें। अपना परिचय शिव बाबा के परिचय से तो जुटा ही रहना चाहिये क्योंकि वही हमारे माता-पिता, सखा, मार्गदर्शक एवं सर्वस्व हैं।

८. निवेदन, प्रस्ताव आदि

कई बार किसी से कुछ कार्य भी कराना होता है और उसके लिये अनुनय-विनय, निवेदन-आवेदन या प्रस्ताव-झुकाव भी करना होता है। परन्तु शिव बाबा ने समझाया है कि सदा शुभ और अच्छे ही कार्य के लिए आवेदन करना चाहिए और अपनी स्थिति से नीचे नहीं गिरना चाहिये बल्कि नारायणी नशे में एवं ईश्वरीय कुल के स्वभाव में टिककर, दिव्यगुणों से युक्त होकर प्रस्ताव या आवेदन करना चाहिये। हमारे वचनों में नम्रता तो हो परन्तु हीनता-दीनता, भय-ह्रास या गिरावट की दुर्गन्ध नहीं होनी चाहिये। हम स्वयं के लिये तो किससे कुछ धन मांगते नहीं; मांगने की बात से बाबा ने मरने को भला बताया है। शिव बाबा से भी मांगने की ज़रूरत नहीं; बाबा ने उसे भी 'भिखारीपन' कहा है। अत: हमारा आवेदन-निवेदन लोक-कल्याण ही के कार्यार्थ युक्त भाषा में होना चाहिये।

९. अभिवादन, स्वागत, निमन्त्रण

हमें किसी के स्वागत, अभिवादन आदि के सिलसिले में भी कुछ बोलना पड़ता है। ऐसे अवसर पर हमें व्यक्ति विशेष के गुण भी बताने पड़ते हैं परन्तु आत्मा के गुणों के साथ हमें प्यारे शिव बाबा, जो कि सर्वगुणों के अतुल भण्डार हैं और गुण-दाता हैं, के गुणों की चर्चा करना भी नहीं भूलना चाहिये। स्वागत, निमन्त्रण से सम्बन्धित हमारे बोलों में अलौकिकता अवश्य होनी चाहिये और शिव बाबा के निमित्त बनकर ही हमें यह कार्य क ना चाहिये।

१०. सहानुभूति प्रगट करना, आदि

कोई व्यक्ति शरीर छोड़ देता है तो उसके मित्र-सम्बन्धियों से सहानुभूति प्रगट करने और यदि कोई रोग-ग्रस्त होता है अथवा व्यापार में हानि होने से पीड़ित होता है तो ऐसे अवसरों पर भी मनुष्य को बात करनी पड़ती है। परन्तु बाबा ने हमें समझाया है कि ऐसे अवसर पर शोक को बढ़ाने या देह-धारियों की याद दिलाने वाली बातें न कह कर, आत्मा और परमात्मा की, कर्मफल तथा दिव्य धारणा की बाते बतानी चाहिएं ताकि आत्माओं को शान्ति मिले और वह देहाभिमान से निकल कर आत्मिक स्थिति को प्राप्त हों।

११. स्मृति-वार्त्ता

कई बार हम दूसरों को कोई बात याद दिलाने के लिये ही उनसे बोलते हैं। कोई बात जो वे भूल गये हों, उसकी ओर उनका ध्यान खिचवाने के लिए या उनके बारे में ताकीद करने के लिये ही हम उनको सम्बोधित करते हैं। परन्तु देखने की बात यह है कि उन्हें याद दिलाते समय तुनका तो नहीं लगाते, अर्थात् 'टांट' (taunt) तो नहीं करते ? उदाहरण के तौर पर हम उन्हें ऐसा तो नहीं कहते—"अरे भाई, आप कैसे आदमी हैं; आप बार-बार भूल जाते हैं ! लगता है कि आपका दिमाग यहां न होकर कहीं और चक्कर लगाने चला जाता है। हम आपके नौकर थोड़े ही हैं कि आपको बार-बार याद दिलाते रहें। आप तो ऐसे व्यक्ति हैं कि यदि

हम आपको याद न दिलाते तब आप तो बट्ठा ही बिठा देते···।" इसकी बजाय हमें या तो शुभ-चिन्तक होकर दूसरे को वह बात याद दिलानी चाहिये जो हम जरूरी समझते हैं, वरना चुप ही रहना चाहिये और या हमें सेवा मान कर इस कार्य में स्वयं को सहयोगी मानना चाहिये। हमें सोचना चाहिये कि हमें भी तो शिव बाबा पवित्र बनने और आत्मा निश्चय-बुद्धि बनने की बात बार-बार याद दिलाते हैं। हम फिर-फिर भूल जाते हैं परन्तु शिव बाबा तो हमारे कल्याण की भावना से, विनोदपूर्वक हमें हज़ारों बार इसकी याद दिला चुके हैं। उन्होंने इस बात को कभी भी क्रोध से या डांट कर तो नहीं दुहराया। अतः हमें भी यदि स्मृति दिलाने के लिये बोलना हो तो चिड़चिड़ेपन से नहीं बल्कि सहानुभूति से बोलना चाहिये।

१२. प्रशंसा-वार्त्ता

किसी से हमें इसलिये भी बोलना पड़ता है कि हमें उसकी सफलता पर उसे मुबारिक देनी होती है और अपनी प्रसन्नता प्रगट करनी होती है अथवा किसी अन्य व्यक्ति के कार्य की उसके समक्ष सराहना करनी होती है। ऐसा करते समय हमें अतिशयोक्ति नहीं करनी चाहिये वरना वह बात चापलूसी का रूप ले लेगी अथवा सुनने वाले को भी या तो संकोच होगा या उसमें अभिमान आ जायेगा और अन्य जो उतनी प्रशंसा नहीं करता होगा उसके प्रति उसके मन में घृणा पैदा हो जायेगी। अधिक प्रशंसा पाने से उसके कार्य का फल भी उसे उतना ही कम मिलेगा क्योंकि काफी फल तो उसने प्रशंसा के रूप में प्राप्त कर ही लिया होगा।

पुनश्च, किसी के भी कार्य या गुणों की सराहना करते समय हमें शिव बाबा की भी स्मृति इस प्रकार बनी रहनी चाहिये कि सभी गुणों की खान तो शिव बाबा ही है और वही गुणदाता है। अतः मन में और वाणी में भी कल्याणकारी शिव बाबा की प्रशंसा प्रगट होनी चाहिये। ऐसा नहीं होना चाहिये जिससे शिव बाबा छिप जायें और कोई देहधारी व्यक्ति ही प्रत्यक्ष हो, बल्कि व्यक्ति की प्रशंसा द्वारा भी हमें शिव बाबा ही को प्रत्यक्ष करना चाहिये।

१३. शिकायत-वार्त्ता

ऐसा भी होता है कि हम जिस व्यक्ति से सन्तुष्ट नहीं होते उसके बारे में हम उसी से या अन्य किसी से शिकायत करने के लक्ष्य से, या नाराज़गी प्रगट करने के भाव से बोलते हैं। ऐसे समय में हमारा मन खिन्न होता है और इसलिये सम्भव होता है कि हमारे मुख से कुछ वचन ऐसे निकलें जिससे सुनने वाले व्यक्ति को उत्तेजना आ जाय, क्योंकि अपनी शिकायत हर व्यक्ति नहीं सुन सकता और दूसरा व्यक्ति भी प्रायः शिकायत को तुरन्त नहीं मान लेता। अतः पहली बात यह है कि शिकवे और शिकायत का प्रायः कोई विशेष लाभ नहीं होता। अतः ऐसी बातें करते समय हमें यह स्मरण रहना चाहिये कि इसका शुभ परिणाम तो बहुत कम ही निकला करता है। परन्तु यदि हम इस भावना से कुछ कहते हैं कि दूसरे आगे के लिये ग़लत कर्म अथवा विकर्म करने से बच जाये तो हमारे बोल कम और यथार्थ होने चाहियें। हमें इसमें भी अतिशयोक्ति नहीं करनी चाहिये और हम से जो अन्याय, अपेक्षा, प्रतिशोध-युक्त या स्वार्थ युक्त व्यवहार होता है, उसे सहन करने में सफल होने की या उस से छुटकारा पाने की कोशिश करनी चाहिये, वरना इस विषय में इधर-उधर, इसको-उसको शिकायत करने का अन्त शुभ नहीं होता। अतः हम शिकायत के भाव से न बोलें, मर्यादा-स्थापना के भाव से तथा कल्याण-भाव को सामने रख कर बोलें।

१४. विचार-प्राकट्य अथवा समालोचना

कई व्यक्ति मांगे-बिना ही राय देने लग जाते हैं अथवा किसी की योजना अथवा विचार पर अपनी टीका करने लग जाते हैं। वे अनाधिकार रूप हरेक

(शेष पृष्ठ २६ पर)

सतयुग और शासन-व्यवस्था अर्थ घोषणा-पत्र

ब्र० कु० रमेश, गामदेवी, बंबई

मानव जीवन सदा सुख और शांति से पूर्ण रहे यह कामना और चाहना सब की है। और शांति के लिये यह बताना भी आवश्यक है कि मेरे सुख और शांति में और कोई बाधा या विघ्न रूप न बने और मैं भी किसी को विघ्न रूप न बनू। मेरी आमदनी तथा मलकियत का मैं जैसा चाहूं उपयोग कर सकूँ और मेरी मलकियत सुरक्षित रहे, कोई चोरी न कर ले। इसलिये शांति के लिये शासन की आवश्यकता है क्योंकि जहां शासन नहीं वहां शांति नहीं। इसीलिये शान्ति भंग करने वालों को कानून के द्वारा दंड आदि देने का प्रयोजन भी किया जाता है।

यह दंड देने वाला कौन? यह एक तार्किक (Logical) प्रश्न है। आज की दुनिया दंड देने वालों के रूप में कानून को जानती है और यह भी मानती है कि यह कानून इस दुनिया को चलाने वाले राज्याधिकारियों द्वारा बनाये जाते हैं तथा समय प्रति समय इस मानव जन्य और दत्त कानूनों में परिवर्तन भी होता है। क्योंकि लोग ऐसा मानते हैं कि कानून शाश्वत नहीं रह सकते। समय के साथ-२ कानूनों में भी परिवर्तन करना चाहिये। यदि कानूनों में परिवर्तन न हुआ तो उन कानूनों द्वारा किये गये शासन के अंदर अनुशासन संपूर्ण नहीं होगा अर्थात् उसके अंदर कई प्रकार के विरोधाभास रह सकते हैं। इसलिये जितना हो सके उतना कानून के अंदर समय प्रति समय परिवर्तन करना चाहिये। कानून के अंदर परिवर्तन इसलिये भी किया जाता है क्योंकि कई बार कानून बनाने में त्रुटियां सिद्ध होती हैं जिस गलत कानून के आधार पर कई अक्षम्य व्यवहार या अपराध, अपराध नहीं किंतु शुद्ध व्यवहार गिने जाते हैं।

कानून बनाने वाली और एक सत्ता है वह है धर्मसत्ता। धर्मसत्ता के भी अपने कानून हैं जिसके आधार पर धर्म स्थापक तथा धर्म के नियामक, समाज के अंदर एक विशेष कानूनी प्रथा चलाते हैं। विविध धर्मस्थापकों द्वारा विविध प्रकार के नियम बनाये जाते हैं और कई बार उन नियमों में दीर्घ दृष्टि का अभाव भी होता है, तो कई बार अपने धर्म के लोगों को उनके गलत व्यवहारों को सही रूप देने के लिये, धर्म के कानूनों में परिवर्तन किया जाता है। उदाहरण के तौर पर विवाह के बारे में सभी धर्मों ने कानून बनाये हैं। हिंदू आदि धर्म में एक ही समय पर एक स्त्री के साथ विवाह हो सकता है तो इस्लाम धर्म में चार स्त्रियों के साथ एक ही समय पर विवाहित जीवन हो सकता है, ऐसा माना गया है। ऐसी चार स्त्रियों के साथ शादी करना कानूनी है। इस बात का आज कई समाज सेवक विरोध करते हैं फिर भी वह धर्मनेताएं अपने कानूनों में परिवर्तन करना नहीं चाहते हैं। क्योंकि धर्मनेताएं ऐसा मानते हैं कि उनके धर्म के कानून जो आदि में बने हैं वे अपरिवर्तनीय हैं और अपरिवर्तनशील होने के कारण वे उनमें कोई संशोधन करना नहीं चाहते हैं।

धर्मसत्ता के अतिरिक्त एक और सत्ता है जिसके अपने कानून हैं और जिस कानून के शासन द्वारा विश्व चलता है वह है ईश्वरीय सत्ता और उसके ईश्वरीय कानून। मानव के कानून तथा धर्मसत्ता के कानून सिर्फ मनुष्यों के लिये हो सकते हैं। इन दोनों सत्ताओं के कानून, प्रकृति तथा उसके पांच तत्वों को, मनुष्यों को, सदा सर्व प्रकार के पशु-पक्षी इत्यादि प्राणियों को बांध नहीं सकते हैं परन्तु यह ईश्वरीय सूक्ष्म कानून ऐसी चीज है जो प्रकृति तथा सभी प्रकार के पशु-पक्षी प्राणी आदि को भी बंधन में रखता है। पश्चिम के विल्सन नामक एक पशु-शास्त्री ने चीटियों के समाज और उनके जीवन व्यवहार के बारे में संशोधन किया है। संशोधन के पश्चात् उन्होंने लिखा है कि यह एक आश्चर्य की बात है कि चीटियों का भी एक समाज है और समाज में शासन कानून से चलता है और इन कानून का चीटियां भी अपने जान की भी परवाह न करके पालन करती हैं। तो वे चीटियों के लिये कौन से कानून हैं तथा उन कानूनों को किसने बनाया, यह एक तार्किक प्रश्न प्रो० विल्सन ने हमारे समक्ष रखा है।

ईश्वरीय कानून तथा उस पर शासन एक बहुत

बड़ी आध्यात्मिक शक्ति है जिसका पालन करने से प्राप्ति होती है तथा भंग करने से उसका दंड गुप्त या प्रत्यक्षरूप में मिल जाता है। परमपिता परमात्मा ने अभी हम बच्चों को इस ईश्वरीय कानून के बारे में बताया है कि बाबा ने जो ईश्वरीय कानून के अर्थ धारणा के लिये नियम बताये हैं उस पर चलने से अनेक गुना प्राप्ति होती है और उसको भंग करने से औरों की अपेक्षा हजार गुना दंड मिलता है। परमात्मा धर्मराज भी है जिसकी प्रतीति हम बच्चों को तो है ही। वही धर्मराज अभी रहमदिल बाप है उसी कारण हम बच्चों के द्वारा किये गये पिछले जन्मों के विकर्मों के क्षमा अर्थ योग आदि की विधि भी बताई है जिस विधि का पालन करने से विकर्म भस्म होते हैं और हम आत्माएं पापों से मुक्त भी होती हैं। इस प्रकार अनेक बातें ईश्वरीय कानून के बारे में हम बच्चों को शिवबाबा ने बताई हैं और इस कानून के शासन के आधार पर हमारा दैवी परिवार चलता है और निमित्त बनी हुई बड़ी बहनों की कमेटी को शिवबाबा ने ईश्वरीय सुप्रीम कोर्ट (अदालत) का नाम भी दिया है जिस द्वारा कई प्रकार के फैसले समय प्रति समय होते रहते हैं।

हमें यह अनुभव से मालूम है कि धर्म तथा मानव के कानून अपूर्ण हैं और इसलिये उसमें मानवजन्य कई प्रकार की गलतियां भी हो सकती हैं क्योंकि वहां पर निर्णय लेने-देने वाले न्यायमूर्ति अपूर्ण हैं। मैंने एक बार अपने लौकिक व्यवहार के अंदर हुई एक बात के लिये सोचा था कि मैं उस व्यक्ति पर लौकिक दुनिया के कानून के आधार पर मुकदमा चलाऊँ और उस मुकदमे द्वारा उस व्यक्ति को राज्यसत्ता द्वारा दंड दिलाऊं। परंतु इसके पहिले मुझे शिवबाबा की एक श्रीमत याद आई कि हम बच्चों को कदम-२ पर श्रीमत लेना है। पहिले तो यह विचार आया कि लौकिक बात के लिये श्रीमत क्यों लें परंतु फिर विचार आया कि बाबा ने यह तो नहीं कहा कि लौकिक बातों के लिये श्रीमत नहीं लो। इस पर मैंने प्यारे बाबा को इस लौकिक बात के बारे में श्रीमत प्राप्त करने अर्थ संदेश भेजा। उस पर बाबा ने बहुत ही अच्छा जवाब अर्थात् श्रीमत भेजी "बच्चे लौकिक दुनिया के कानून के आधार पर निर्णय प्राप्त करने में अनेक प्रकार की असुविधाएं हैं। कई बार गलत साक्षी (Evidences) तैयार करके सामने वाला छूट भी जाता है इसलिए बच्चे को लौकिक कानून के शासन द्वारा दंड दिलाने के बदले बाप के ऊपर यह बात छोड़ देनी चाहिए क्योंकि बाप धर्मराज भी है। वह लौकिक आत्मा जिसने तुम्हारे साथ यह बात की है वह आत्मा आखिर तो मेरे पास आयेगी ही। उसी समय मैं धर्मराज बनकर उसका फैसला कर दूंगा। तुझे अब वह लौकिक फैसला प्राप्त करने के लिए अपना अमूल्य समय नहीं गंवाना चाहिए। बच्चे ने बाप के पास यह बात रखी बस इस बात को बच्चा यहीं छोड़ दे।"

उसके बाद मैंने यह बात अपने दिमाग से बिल्कुल हटा दी और उसके पीछे अपने संकल्प और समय बिगाड़ना छोड़ दिया। तब से मैंने शिवबाबा के अनेक रूप और स्वरूप के अंदर धर्मराज का स्वरूप भी अपने सामने रखना सीख लिया और उसी स्वरूप के आधार पर कई बार शिवबाबा से मिलन मना करके अपनी या अन्य की छोटी या बड़ी बातों को रखता हूं तो मुझे फौरन सुख और शांति का अनुभव होता है, संकल्प-विकल्पों से निवृत्ति मिलती है तथा समय की बचत भी होती है।

सतयुगी समाज में सुख शांति आदि है और व्यवस्था भी है, इस समाज में समाज-व्यवहार भी है तो उस व्यवहार का विस्तार २५०० वर्ष तक चलेगा और उसे चलाने के लिए नियम भी हैं। वहां का समाज नियम पर चलता है इसलिए तो वहां पर यम (मृत्यु) जल्दी नहीं आता अर्थात वहां पर दीर्घायु है। इस सतयुगी समाज का शासन किस शक्ति के आधार पर चलेगा इस बात की जानकारी विश्व को नहीं है। यह जानकारी विश्व को कैसे दें यह एक प्रश्न है और इस प्रश्न का जवाब मिला है फरवरी मास में मधुबन में हुए अपने विश्व शांति महासम्मेलन से। इस सम्मेलन के अंत में सम्मेलन में भाग लेने वाले ४० देशों से आये हुए प्रतिनिधि जो कोटि-२ जनता की आकांक्षाओं, आशाओं, विश्वासों तथा भावनाओं का प्रतिनिधित्व

करते थे। उन सबके द्वारा घोषित तथा उन सबके सर्वसम्मति से पारित घोषणा पत्र तथा आचार एवं व्यवहार संहिता है। यह घोषणा पत्र (चार्टर) सम्मेलन के आखिरी सत्र में पारित किया गया। इस चार्टर पर अनेक महानुभावों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। एक वक्ता ने सही बताया कि लौकिक दुनिया के कानून के पालन के लिए बड़ी-२ सरकारें बनाई गई हैं और वे सरकारें करोड़ों रुपये खर्च करके अस्त्र शस्त्रधारी पुलिस, मिलिटरी आदि का संचालन करती है ताकि लोग उन कानूनों का पालन करें। परंतु इस ईश्वर से प्रेरित और नैतिक नियमावली रूपी घोषणा पत्र के संचालन के पीछे कोई भी हिंसक सत्ता या बल नहीं किन्तु एक अहिंसक बल है। यह अहिंसक बल कोई सामान्य बल नहीं बल्कि यह अहिंसक बल दुनिया के सभी हिंसक बलों से श्रेष्ठ बल है। वह है स्वयं परमात्मा और उनकी श्रीमत का बल।

यह घोषणापत्र कोई सामान्य घोषणा-पत्र नहीं किंतु एक अपूर्व घोषणापत्र है क्योंकि इस घोषणापत्र में निर्देशित नियमावली के आधार पर चलने से व्यक्ति अपने व्यक्तिगत जीवन में, व्यवहारिक जीवन में, सामाजिक जीवन में तथा वैश्विक जीवन में सुख और शांति का अनुभव कर सकेंगे। इसलिए यह नियमावली चार भागों में विभाजित की गई है। (१) पहिले भाग में व्यक्ति के जीवन के लिए (२) दूसरे भाग में व्यावसायिकों के लिए (३) तीसरे भाग में विभिन्न प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय तथा धार्मिक संगठनों आदि के बीच संबंधों के लिए और (४) चौथे भाग में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के लिए नियमावली है। **इस घोषणा पत्र के द्वारा ईश्वर ने अपने ईश्वरीय कानून और शासन की व्यवस्था आदि की नियमावली विश्व को दे दी है और यह नियमावली विश्व की सभी आत्माओं व्यवसायों, धर्मों तथा सभी राष्ट्रों के लिए है। इस नियमावली के स्थूल शब्द कोई स्थूल साधारण शब्द नहीं किंतु इस नियमावली के स्थूल शब्दों के माध्यम द्वारा शिवबाबा ने अपनी ईश्वरीय कानून तथा शासन की रूपरेखा इस विश्व के सामने रखी है। आज के यह स्थूल शब्द आने वाली सतयुगी निया के लिए नियम और कानून बनेंगे और इसी नियम और कानून के आधार पर सतयुग में व्यक्ति व्यक्ति के बीच, व्यवसाय के अन्दर, समाज के अन्दर, समाज के सभी घटकों के अन्दर तथा विश्व के सभी राज्यों के आपसी व्यवहार के अन्दर इस ईश्वरीय कानून का चलन अर्थात पालन होगा और खूबी की बात यह है कि यह ईश्वरीय घोषणा पत्र विश्व शांति सम्मेलन के अंदर ४० देशों के प्रतिनिधियों के सामने पारित किया गया अर्थात विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने उसे मान्य किया। उस समय पर वह विश्व-शांति सम्मेलन मुझे विश्वशांति सम्मेलन नहीं किंतु एक** (Universal Constitutional Parliament) **लघु ईश्वरीय कानून बनाने वाली सभा दिखाई पड़ी।**

इस घोषणापत्र के अंतर्गत बताई गई बातों के आधार पर सतयुग में शासन कैसे चलेगा इसके बारे में अनेक बातें बताई गई हैं। जैसे कि व्यक्तिगत जीवन में शांति के लिए बताये गये नियमों में दूसरे नियम में यह बताया है कि स्वयं के बारे में इस स्मृति में रहूंगा कि मैं आत्मा हूं और दूसरों को भी इसी दृष्टि से देखूंगा कि स्व स्वशरीर में वे भी वास्तव में आत्मा हैं और मेरे आत्मिक भाई हैं। यह नियम सिर्फ स्थूल नियम नहीं किन्तु हम सभी ब्राह्मणों की धारणा है। आज हमारे व्यक्तिगत जीवन में तथा विश्व में अनेक प्रकार के सामाजिक वायुमंडल के कारण इस नियम पर चलने का पुरुषार्थ करना पड़ेगा परंतु चलते-२ इस नियम की धारणा जीवन व्यवहार का अंग बन जाती है और इतने तक उनका अंग बन जाएगी कि बाद में इस नियम को याद रखने की जरूरत नहीं रहेगी। जैसे मोटर-कार चलाने के पहिले कार चलाने के नियम सीखने पड़ते हैं और घड़ी-२ उसको याद करना पड़ता है परंतु बाद में वे नियम इतने याद हो जाते हैं कि वे नियम जीवन बन जाते हैं और उसके आधार पर कार चलाने में कोई समस्या नहीं रहती अर्थात उस नियम का शासन, सामान्य रूप धारण कर लेता है और बाद में उन नियमों को याद रखने की जरूरत नहीं। ऐसे ही ईश्वरीय घोषणा पत्र में बताये गये नियमों का शासन संगम युग में, इतने तक हम सभी आत्माओं में संस्कार रूप में प्रस्थापित हो जायेगा कि सतयुग में यह ईश्वरीय नियमावली स्थूल रूप में नहीं रहेगी

किंतु उसका सूक्ष्म पालन सभी आत्माएं करेंगी। इतनी इस नियमावली की श्रेष्ठ धारणा तथा शासन शक्ति अव्यक्त रूप में विश्व में होगी। अव्यक्त परमात्मा की इस अव्यक्त नियमावली की धारणा के शासन द्वारा विश्व में सुख और शांति इतने तक होगी कि परम-पिता परमात्मा को भी पिता, सखा, परमात्मा, धर्मराज, बंधु, गोपीवल्लभ आदि-२ कोई भी रूप में २५०० वर्ष तक हम आत्माओं को मदद नहीं करनी पड़ेगी। यह ईश्वरीय सौगात हम बच्चों को वर्से के रूप में अव्यक्त रूप में अपने सतयुगी विश्व के अंदर सुख और शांति सदा के प्रस्थापित करने में मददगार बनेगी। सतयुगी शासन का यह प्रतीक है।

ईश्वर ने तो यह नियमावली हम बच्चों को दे दी। अभी हम बड़ों का फर्ज है कि हम पहिले तो जैसे गाय एक बार घास खाकर बाद में उसे उगारती रहती है ऐसे ही इस ईश्वरीय नियमावली को और उसके द्वारा होने वाले शासन के प्रभाव को समझें तथा उसके द्वारा हम अपने निजी जीवन के व्यवसाय और व्यवहार को शुद्ध कर तथा ईश्वरीय सेवा के रूप में सभी आत्माओं को, सभी व्यवसाय को, सभी धर्मों, संस्थाओं, राज्यों को इसकी सूचना दें और उसको विस्तार में समझा करके उसके प्रमाण जीवन व्यवहार प्रस्थापित करने का मार्गदर्शन करें। शांति दूत बनकरके विश्व में शांति का एक मात्र साधन यह ईश्वरीय नियमावली है— इसका संदेश दें। शिवबाबा ने हम बच्चों पर अभी बहुत बड़ी भारी जिम्मेदारी रखी है, इसलिये इस घोषणा पत्र का प्रचार अच्छी रीति से करना होगा क्योंकि यह घोषणा पत्र और उसका शासन विश्व के सभी देशों के लिये है।

एक और बात कानून के शासन में आती है कि पारित किये गये कानून के अज्ञान को अज्ञान नहीं कहा जा सकता (Ignorance of law is no excuse) और उसी कारण अज्ञानता के वश किये गये कर्मों का भी सरकार दंड देती ही है। इस प्रकार इस ईश्वरीय घोषणा पत्र के द्वारा प्रस्थापित शासन के भंग का दंड सभी को मिलेगा। जो उसकी सत्ता को मानेगा वही आत्मा जब इस कानन का शासन विश्व में होगा तब वह सृष्टि में जन्म ले सकेगा। इसलिये इस ईश्वरीय कानून की शक्ति बहुत व्यापक है और जो उसकी धारणा और शासन अभी अपने जीवन में लायेगा सिर्फ वही आत्मा सतयुगी सुख और शांति का अनुभव कर सकेगी।

विश्व शांति महासम्मेलन की सच्ची सफ़लता यही है कि इस ईश्वरीय घोषणा पत्र को हम विश्व की सभी आत्माओं तक ले जायें। ०

पटियाला में गणमान्य व्यक्तियों की सभा में 'आबू कान्फ्रेंस' में अपने अनुभव सुनाते हुए प्रसिद्ध उद्योगपति भ्राता करनैलसिंह जी, मंच पर दादी चन्द्रमणि जी, ब्र० कु० नरपत जी, एवं भ्राता मोहनलाल गर्ग जी विराजमान हैं।

अद्भुत चमत्कार

कुछ के लिए विचित्र तथा अन्य के लिए वास्तविक

—भारत भूषण, मुख्य उप-सम्पादक, पी० टी० आई०, नई दिल्ली

अंतर्राष्ट्रीय शान्ति सम्मेलन के समापन दिवस के अवसर पर संयुक्त राष्ट्र संघ के उपमहासचिव सहित ३००० प्रतिनिधियों तथा आमंत्रित व्यक्तियों ने एक अद्भुत तथा विचित्र घटना को प्रत्यक्ष रूप से देखा। यह अद्भुत घटना थी ब्रह्माकुमारियों की वरिष्ठ सदस्या, गुलज़ार बहन के शरीर में ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के संस्थापक बाप दादा की आत्माओं का प्रवेश तथा उनके द्वारा सम्मेलन में उपस्थित विशेष व्यक्तियों तथा विदेशी प्रतिनिधियों से उनकी बातचीत।

माऊंट आबू के इस मुख्यालय में पहली बार आए हुए कुछ विशेष व्यक्तियों को ही (जिनमें एक मैं भी था) यह घटना विचित्र लगी जबकि अन्य व्यक्तियों को इसकी वास्तविकता में कुछ भी संदेह न था।

इस घटना से आश्चर्यचकित, विस्मित तथा कुछ सीमा तक स्तब्ध मैंने गुलज़ार बहन से साक्षात्कार किया। पचास वर्षीय गुलज़ार बहन बहुत ही सरल, शांत तथा विनम्र महिला हैं। इस बारे में लगभग एक घंटे तक मैंने उनसे बातचीत की। उन्होंने मेरे सभी प्रश्नों का उत्तर बहुत धैर्य से दिया।

बातचीत के प्रारंभ में ही गुलजार बहन ने प्रवेश (शरीर में शिवबाबा तथा ब्रह्मा बाबा की उपस्थिति) तथा योगमुद्रा (समाधि) में अंतर स्पष्ट किया। बाप दादा के प्रवेश होने पर जबकि उनकी आत्मा अचेतावस्था में हो जाती है और इसमें उन्हें यह बिल्कुल भी स्मरण नहीं रहता कि बाबा ने क्या कहा अथवा क्या किया, ध्यानावस्था में उन्हें अपने शरीर तथा इन्द्रियों का बोध तो नहीं रहता परन्तु ध्यानावस्था के बाद उन्हें सभी दृश्य तथा ध्वनियां याद आ जाती हैं।

उनके अनुसार मनुष्य सिर्फ योगाभ्यास द्वारा ही इन अद्भुत अवस्थाओं को प्राप्त नहीं कर सकता बल्कि ईश्वर कृपा द्वारा ही यह प्राप्त होती हैं।

गुलज़ार बहन का ऐसा कहना है कि वह ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने पर तथा सूक्ष्म लोक निवासी बनने पर पिछले १३ वर्षों से ब्रह्मा बाबा और शिव बाबा से बातचीत करती रही हैं तथा बाप दादा का वह माध्यम बनी हुई हैं। जब ब्रह्मा बाबा मूलवत में जाएंगे, तो कुछ समय वहां रहने के पश्चात् स्वर्ग में जन्म लेंगे।

जब भी गुलज़ार बहन या अन्य किसी भी दीदी या दादी (विश्वविद्यालय की प्रशासनिक प्रधान) के सम्मुख कोई भी समस्या उत्पन्न होती है, विशेषतया विश्वविद्यालय के कार्यक्रमों, सम्मेलनों या सेमीनार से संबंधित, तो उनके ही शब्दों में "मैं समय से ३ या ४ माह पूर्व ही बाबा के वतन में उनसे मार्गदर्शन के लिए जाती हूँ। उनसे प्रत्येक कार्य के सम्बन्ध में परामर्श करके तथा उनका आशीर्वाद लेकर ही हम अपने कार्यक्रम की घोषणा करते हैं।"

क्या जब भी वह चाहती हैं तभी बाबा से मिल सकती है ?

गुलज़ार बहन ने इस प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा कि अधिकतर तो जब वह चाहती हैं, उनसे मिल लेती हैं परन्तु यह बाबा पर भी निर्भर करता है कि क्या वे मिलना ज़रूरी समझते हैं। उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि कभी कभी वह अपने इस प्रत्यन्न में असफल भी रहती हैं।

जब बाबा की आत्मा का प्रवेश उनमें होता है तो उनके ही शब्दों में "मुझे कुछ भी याद नहीं रहता कि मैं क्या बोल रही हूँ और किससे बात कर रही हूँ तथा दूसरों को मैंने क्या संदेश दिया। उस समय मेरी स्मृति लुप्त हो जाती है। और जब कार्य समाप्त हो जाता है तब बाबा मुझे कहते हैं कि मैं अपने वतन वापिस लौट सकती हूँ।"

गुलज़ार बहन का कहना है कि ८ से ९ घंटे तक लगातार बाबा के माध्यम के रूप में कार्य करती रही हैं।

अपनी चेतना में लौटने पर उन्हें कैसा अनुभव होता है ?

क्योंकि इस अवधि में मैं अपने शरीर के संपर्क में नहीं रहती हूँ इसलिए काफी समय तक मैं बिल्कुल तरोताज़ा अनुभव करती हूँ, हाँ, अगले दिन मुझे आराम की ज़रूरत रहती है, परन्तु मुझे थकान बिल्कुल नहीं होती।

गुलज़ार बहन को सर्वप्रथम ९ वर्ष की आयु में ध्यानावस्था प्राप्त हुई। उन्होंने याद करते हुए बताया कि वह उस समय अपने घर करांची से हैदराबाद १९३६ में पिताश्री के सत्संग में गई थीं। उस समय वह न तो राम के बारे में जानती थीं न कृष्ण के बारे में और न ही भक्ति के अर्थ और महत्व को ही जानती थीं।

परन्तु तब उसके माता पिता तथा अन्य उपस्थित व्यक्ति आश्चर्य चकित रह गए जब वह ३० मिनट के लिए ध्यान में चली गई !

और ध्यानावस्था से उतरने के बाद वह बहुत बुरी तरह रोई क्योंकि वह तब कुछ ऐसी अनुभूति से गुज़री थीं जो साधारण नहीं थी और वह सब कुछ समझने के लिए उनकी आयु बहुत कम थी।

उनके माता पिता तथा अन्य व्यक्तियों ने जब यह पूछा कि समाधि में उन्होंने क्या देखा तो गुलज़ार बहन ने बताया कि उन्होंने रोशनी से जगमगाते एक बहुत बड़े हाल में जिसे सोने और हीरों से सजाया गया था एक बच्चे को नृत्यमुद्रा में देखा। तब उन्हें राम तथा कृष्ण की मूर्तियां दिखाईं तथा पूछा कि क्या नृत्य मुद्रा का वह बालक ऐसा ही था ? तो उन्होंने जवाब दिया कि जैसा सौंदर्य उन्होंने देखा वह कोई भी कलाकार नहीं बना सकता।

तब गुलज़ार बहन के माता पिता को यह निश्चय हो गया कि उनकी पुत्री आध्यात्मिक संस्कारों युक्त है तथा उन्हें हैदराबाद में बाबा द्वारा स्थापित "ओम निवास" में प्रवेश दिला दिया जहां बच्चों को धार्मिक शिक्षा प्रदान की जाती थी।

वह सिर्फ एक बार अपने पिता की सलाह पर घर आयीं परन्तु एक साल बाद ही उन्हें वापस भेजा गया। उनके माता पिता ने सोचा कि उनका जन्म सिर्फ ईश्वर प्राप्ति के उद्देश्य से हुआ है।

पांच वर्ष तक ९ से १४ वर्ष उन्हें फिर ध्यानावस्था की अवस्था प्राप्त नहीं हुई परन्तु बाद में उन्हें फिर साक्षात्कार के अनुभव प्राप्त होने लगे। इस अवस्था में उन्हें हिन्दु देवता विष्णु तथा शंकर के दर्शन होते थे।

उन्होंने यह भी दावा किया कि उन्होंने अपनी ध्यानावस्था में हिटलर द्वारा द्वितीय विश्व युद्ध की तयारियों को बहुत पहले ही देख लिया था। जब उन्होंने इस बारे में बाबा को बताया तो उन्होंने कहा "प्रतीक्षा करो और देखो"। उन्होंने बताया कि वह संपूर्ण दृश्य कुछ ही वर्षों में सत्य घटित हो गया।" ०

भुवनेश्वर में ब्र० कु० निर्मल-शान्ता जी के पधारने पर स्वागत करते हुए वहां के बहिन भाई, ब्र० कु० रमेश जी साथ में हैं।

"वक्त की पुकार"

(ब्र० कु० रानी, मुजफ़रपुर)

जिस तरह कोई व्यक्ति, जो पहले श्रेष्ठ था, किसी बाह्य या आन्तरिक कारणवश पद से गिर गया हो और दूसरों को प्रेरित करता है श्रेष्ठ बनने बनाने को, जिससे स्वयं का भी उद्धार हो और दूसरों का भी। ठीक उसी प्रकार आज का वक्त जो पहले सतो प्रधान था, सतो, रजो और अब तमो अवस्था में आ गया है, आज विश्व की आत्माओं को श्रेष्ठ बनने की प्रेरणा दे रहा है। वक्त स्वतः खराब हुआ है, बल्कि अनेक मिथ्यावक्ताओं, विषय-भोक्ताओं, ऐयाशियों के रूखे सुख के कारण खराब हुआ है जिसमें आनन्द का नामो-निशान नहीं। ये ईश्वर से दूर ले जाने वाले मार्ग हैं। हम आत्मायें ही, जो पूर्व जन्मों में श्रेष्ठ देवी-देवता थे, इतने भ्रष्ट बनकर वक्त को भी भ्रष्ट कर दिया है। कल्प पहले भी देवपद पाकर वक्त को श्रेष्ठ बनाया, तो भ्रष्ट बनाने के भी और पुनः श्रेष्ठ बनाने के भी हम ही जिम्मेदार हैं। हम अपने स्वमान से गिरे, श्रेष्ठता को भूले। वक्त को अब भी अपनी श्रेष्ठता की स्मृति है, जिसका इतिहास साक्षी है, तो फिर वही उत्थान का समय है, जिसके लिए वक्त हमें प्रेरित कर रहा है।

आज मानव जो क्षणिक सुख के पीछे दौड़ रहा है, कोई राजनीतिक के पीछे, कोई पद प्राप्ति के लिए, कोई धन की प्राप्ति के लिए। ऐसे मार्ग पर दौड़ रहा है जिसका न कोई निश्चित ऐम (Aim) है और न कोई आब्जेट (Object)। मानव आनन्द की इच्छा तो रखता है किन्तु अधिक महत्व दुख को देकर उसी को पाने की चेष्टा में है। आज की किसी भी वस्तु वा व्यक्ति का सुख ऐसा है जो स्वयं को वास्तविकता से दूर ले जाता है। स्व यानि आत्मा (Soul) और उसके पिता (Father) दोनों के परिचय के मात्र से दूर ले जाता है जो आनन्द की प्राप्ति का साधन है। केवल सुख के पीछे मानव इतना बावला हो गया है कि जैसे कीचड़ से भी सड़ी हुई रोटी को उठाकर भूखा व्यक्ति अपनी भूख मिटाने को तैयार रहता है। देवत्व से दूर तो हो ही गया, मानवता स भी दूर, दानवता का रूप धारण कर विकारों, चोरी, डकैती, अपहरण, हत्या का मार्ग अपना रहा है। कोई पारिवारिक सम्बन्धों के निभाव में फंसा है, कोई अपने तन व घर के सजावट से परिवार, समाज और विश्व से सम्मान पाने में।

फिर भी वक्त चुप नहीं है। वह हमारी राहों को बार-२ डगमगाकर सचेत कर रहा है, अज्ञान से जगा रहा है कि जाग मानव जाग, यह मार्ग ठीक नहीं है। इन गंदी आदतों, मनोविकारों से युद्ध कर और जीत लो।

"जागो सब मिलकर के,
विश्व को स्वर्णिम बना लें,
खोया हुआ सम्मान, स्वमान,
फिर से हम पा लें।"

आज बार-२ भूकम्प, बाढ़, सुखा-ग्रस्तकाल हो रहा है, मृत्यु का वा शरीर निर्वाह का ठिकाना नहीं। रेल, जहाज व अन्य यातायात की दुर्घटना, चोरी डकैती की घटना से वक्त हमारे मन को क्षणिक सुखदायी साधानों से हटाना चाहता है। मानव जो यह समझता है कि अभी तो मैं थोड़े वर्ष का हूं, मेरी अभी बहुत जिन्दगी पड़ी है, आकस्मिक दुर्घटना से वक्त हमें सचेत कर रहा है कि मृत्यु कब भी आ सकती है, कल करे जो आज कर, आज करे सो अब·····। आजकल प्रायः ऐसी घटनायें देखी या सुनी जाती है कि पिता ने पुत्र को, पुत्र ने पिता को, मां को, फलाने ने फलाने को मारा, हत्या कर दी। इन घटनाओं से वक्त हमें सचेत कर रहा है कि सम्बन्ध व सम्पर्क वालों में कोई सार नहीं है, सभी स्वार्थी हैं। मानव जो अब तक समझते थे कि परिवार के निभाव के लिए तो चाहे कैसा भी हो कर्म करें, करना ही होगा किन्तु इन घटनाओं के द्वारा वक्त हमें कह रहा है कि ये सम्बन्धी स्वार्थी हैं, और पाप-पुण्य के साथी नहीं हैं। तन और घर सजाने की बात का जहाँ तक प्रश्न है, तन को सजाने के लिए तो सोने चांदी पहनने का वक्त है नहीं, फिर भी आर्टीफिशीयल गहने पहनकर सजायें, तो भी अपहरण, हत्या की घटनाएं हमें इससे भी सचेत करती हैं। कोई भी हमारे आकर्षण से हमें धनी समझकर हत्या भी कर सकता है।

इस तरह दिन-प्रतिदिन वक्त हमें अनेक भयंकर घटनाओं से सचेत कर रहा है कि वक्त को देखकर स्वयं को

(शेष पृष्ठ २१ पर)

विमान क्यों नहीं आया ?

ले० ब्रह्माकुमारी चक्रधारी,
दिल्ली

प्यारे बच्चो, आज हम आपको श्रीमद्भागवद् से सम्बन्धित एक उपयोगी कहानी सुनाते हैं।

श्रीमद्भागवद् की कथा के सम्बन्ध में यह बात प्रसिद्ध कि जब शुकदेव ने राजा परीक्षित को भगवान और गोप गोपियों के चरित्र सुनाये तो अन्त में राजा परीक्षित को मुक्तिधाम में ले जाने के लिए भगवान का भेजा हुआ विमान आया।

इसी भावना से एक गृहस्थी यजमान ने अपने घर में श्रीमद्भागवद् का पाठ कराया। एक पण्डित जी को उसने २०० रुपये दक्षिणा में देना स्वीकार किया। यजमान अपना कार्य-व्यापार छोड़कर बड़ी श्रद्धा भावना से गोपीवल्लभ भगवान के चरित्र सुनता रहा। एक सप्ताह के बाद जब कथा समाप्त हुई तब विमान तो आया नहीं। बेचारे यजमान को बहुत निराशा हुई। वह तो सोचे बैठा था कि विमान आएगा और मैं इस दुःखधाम से मुक्तिधाम चला जाऊंगा। आखिर उसने अपना मनोबल एकत्रित करते हुए कहा—"पण्डित जी, मैंने तो बहुत प्रीति पूर्वक सारी कथा को सुना है। मेरी भावना में कोई कोर-कसर रही हो—ऐसा भी नहीं। तब भला मेरे इस दुर्भाग्य का क्या कारण है कि जिस कथा को राजा परीक्षित ने सुना तो विमान आ गया और मेरे सुनने पर बोइंग (Boeing) तो छोड़ो, छोटा-सा हेलीकोप्टर (Helicopter) भी नहीं आया।"

पण्डित जी ने कहा—"यजमान जी, बात यह है कि कलियुग में पुण्य का फल थोड़ा मिलता है। कोई चौगुना अच्छा कर्म करे तब कहीं जाकर उसे द्वापर युग के बराबर फल मिलता है। इस बात को ध्यान में रखा जाए तो आपने किया ही क्या है। २०० रुपये में मुक्तिधाम के लिए विमान कैसे आ जाएगा।"

यजमान ने कहा—"पण्डित जी, अगर चार गुणा करने से उतना फल हो सकता है तो ६०० रुपये और ले लीजिए। जिस भी तरह से भगवान की मुझ पर कृपा हो, वैसा ही उपाय होना चाहिए।" यह कहकर उसने पण्डित जी को ६०० रुपये और दे दिये और फिर से कथा करने के लिए कहा।

सब कुछ करने कराने पर भी विमान तो आया नहीं। तब दोनों मिलकर एक महात्मा के पास गये। पण्डित जी ने कहा—'महाराज, यह यजमान बड़ा श्रद्धालु है और बड़े प्रीति पूर्वक ही इसने गोपी वल्लभ भगवान के चरित्रों को सुना है और इसने दक्षिणा तथा पुण्य करने में भी कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी। अब इनका प्रश्न यह है कि शुकदेव ने जब राजा परीक्षित को कथा सुनाई थी, तब तो विमान आ गये थे और अब जब मैंने कथा सुनाई, तब भला विमान क्यों नहीं आये ? इस प्रश्न को कृपया आप ही हल कीजिये। इसमें हमारा कोई संशय नहीं है बल्कि जिज्ञासा-मात्र है। और ये इनकी प्रभ-प्रीति ही है कि ये संसार के माया-मोह से छूटकर मुक्तिधाम में जाने को उद्यत हैं। इनके प्रति शुभ भावना से मन तो मेरा भी यही चाहता है कि इनकी प्रभु-प्रीति सफल हो। परन्तु असफलता का कारण नहीं समझ में आता।"

महात्मा बोले—"क्या मेरे कथन में आपको विश्वास होगा ?"

पण्डित जी और यजमान एक साथ बोले—"अवश्य, विश्वास न होता तो हम यहां कैसे आते।"

महात्मा बोले—"तो मैं जो कुछ करूँगा, तुम्हें कोई आपत्ति नहीं होगी ?"

वे बोले—"बिलकुल नहीं, कदापि नहीं।"

महात्मा जी ने अपने शिष्य को आज्ञा की कि वे दोनों के हाथ पांव को एक-एक रस्सी से बांध दे।

वे बेचारे आश्चर्यान्वित जरूर हुए परन्तु साथ-साथ उन्होंने यह भी सोचा कि इसका कुछ अभिप्राय: भी अवश्य ही होगा जो शीघ्र ही सामने भी आ जाएगा। अत: उन दोनों ने बांधे जाने में कोई आपत्ति नहीं की।

जब दोनों बंध चुके तो महात्मा जी बोले—"अब यदि चाहो तो तुम दोनों एक-दूसरे को खोल दो। देखते क्या हो, खोल ही दो न !"

थोड़ी देर के बाद फिर महात्मा जी बोले—"मेरी ओर आश्चर्य से देखते क्या हो, बंधा तो कोई भी नहीं रहना चाहता। तब आप एक-दूसरे को खोलते क्यों नहीं ?"

बंधन में जकड़े हुए पण्डित जी बोले—"महाराज, आप तो असम्भव बात कह रहे हैं। यदि हम चेष्टा भी करें तो भी भला कैसे खोल सकते हैं ? जो स्वयं बंधा हो, वह भला दूसरे को कैसे मुक्त कर सकता है ? और महाराज, हम तो दोनों ही बंधे हुए हैं, तब भला कौन किसको खोले ?"

महात्मा जी बोले—"अब तो आपको इससे आपके प्रश्न का उत्तर मिल गया होगा।"

पण्डित जी बोले—"महाराज, थोड़ा स्पष्ट कर देंगे तो अधिक अच्छा होगा।"

महात्मा जी बोले—"आप भी जीवन बद्ध हैं और ये यजमान जी भी, तब भला आप इन्हें कैसे मुक्त कर सकते हैं ? और आपको भगवान जी के सत्य चरित्र ही कहां मालूम हैं कि जिनको सुनाने से मुक्तिधाम के लिए विमान आ जाएगा।"

बच्चो, इस कहानी से यह तो स्पष्ट हो ही गया होगा कि कथावाचक पण्डित, पुजारी आदि-आदि तो सभी स्वयं ही अपने कर्मों व संस्कारों के बन्धन में हैं। एक परमात्मा ही हैं जो सदा मुक्त हैं। अत: वे जब संगम युग में आकर प्रेक्टिकल में कर्त्तव्य करते हैं तो संगम युगी ब्राह्मण जो सुखदाता परमात्मा की सन्तान सुखदेव हैं, उनके सही चरित्र सुनाते हैं। उससे ही मनुष्यता मुक्ति प्राप्त करती है। चूंकि मुक्तिधाम ऊपर को है, इसलिए अलंकारिक भाषा में कहा गया है कि उन्हें 'विमान' मुक्तिधाम में ले जाता है। ✶

ज्ञान के अनमोल मोती

१. बाबा से पावर तब मिलती है जब बुद्धि प्लेन है। बुद्धि में प्लैन भी न चले। प्लैन ड्रामा का बहुत ही सुन्दर बना हुआ है। चलता ही रहेगा। सिर्फ तुम देखते चलो। प्लैन बनाया फिर प्रैक्टिकल में न हुआ तो कब अपने आप से अपसैट हो जाते, कब दूसरों से अपसैट हो जाते। तो खुद रहो प्लेन और साक्षी हो करके देखो ड्रामा का प्लैन। यह अनादि ड्रामा बड़ा एक्यूरेट बना हुआ है। इसको भी समझना है।

२. सब अपनी चेकिंग करो कि सुबह ४ बजे से लेकर ८ बजे तक क्या-क्या किया ? फ़ुल कास्ट ब्राह्मण वह है जो ४ बजे से ८ बजे तक विधि पूर्वक बाबा की याद में रहे। इन ४ घण्टों का पूरा-२ फायदा उठाओ। जो भगवान कहता वह करते चलो। भगवान पढ़ाता है कोई कम बात है क्या ?

मणिनगर (अहमदाबाद) सेवा केन्द्र द्वारा धोलका में आयोजित 'आध्यात्मिक सम्मेलन' में ब्र० कु० शारदा प्रवचन करते हुये। उनके साथ भ्राता शाह जयन्तीलाल, खुशालदास (प्रमुख ॐ परिवार), भ्राता मुकुन्द भाई पाठक तथा डा० चुन्नीलाल शुक्ल विराजमान हैं।

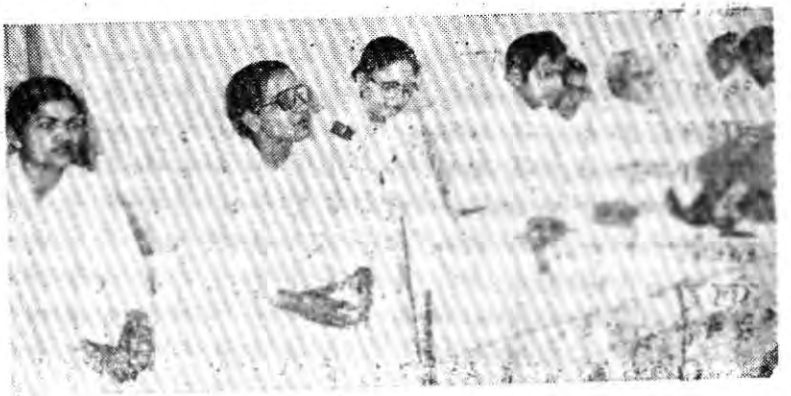

अमरेली सेवा केन्द्र द्वारा बगसरा में आयोजित प्रदर्शनी के समाप्ति समारोह में ब्र० कु० गीता जी प्रवचन करते हुये। साथ में ब्र० कु० मीना बहिन, अमेरिका से ब्र० कु० चन्द्रु बहिन तथा अन्य भाई मंच पर बैठे दिखाई दे रहे हैं।

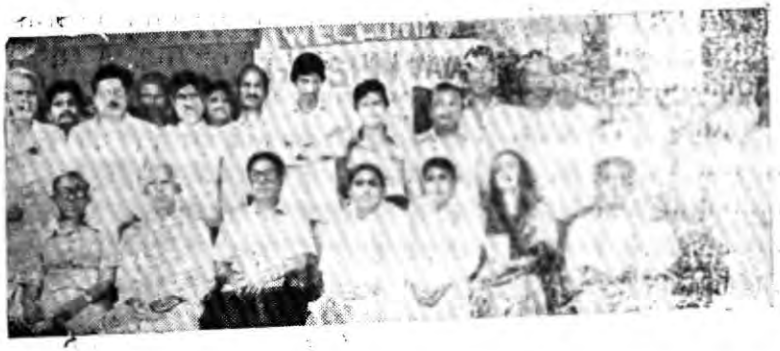

बलसाड़ (उड़ीसा) सेवा केन्द्र पर आयोजित स्नेह मिलन में (बाएँ से) भ्राता डी० एन० राओत, प्रिंसिपल गवर्नमेंट ट्रेनिंग कलिज बलसाड़, भ्राता सी० एम० त्रिपाठी, भ्राता महेन्द्र मिश्रा, ब्र० कु० सुशीला ब्र० कु० वीना, भ्राता योगेशदास और उनकी धर्मपत्नी बैठे है तथा अन्य भाई-बहिन खड़े हुये दिखाई दे रहे हैं।

वी० वी० पुरम बँगलौर सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित सार्वजनिक कार्यक्रम में भारत के भूतपूर्व उपराष्ट्रपति भ्राता बी० डी० जत्ती माऊंट आबू कान्फ्रेन्स में हुये अपने अनुभव सुनाते हुये। मंच पर उनके साथ अन्य गणमान्य व्यक्ति बैठे हैं।

भटकता मन और राजयोग

डा० निरंजन मिश्र एम. ए. पी. एच. डी., अलवर

बीसवीं सदी का उत्तरार्द्ध ! कई देन हैं इसकी। मानव के संदर्भ में सर्वाधिक व्याप्त देन है बेचैनी, व्याकुलता। समाज का हर वर्ग, हर उम्र, हर स्थिति तथा हर धंधे का आदमी व्याकुलता का शिकार है। अन्दर ही अन्दर अशान्त है। न जाने कौन सा अज्ञात भय समा गया है जो उसकी स्वाभाविक खुशी और आनन्द को ग्रसे जा रहा है। चाहे प्रशासक हो, चाहे उद्योगपति, अध्यापक हो या व्यापारी—सब एक भागमभाग की जिन्दगी जी रहे हैं। स्वाभाविक प्रसन्नता लुप्त हो गयी है। ब्लडप्रेशर बढ़ते जाते हैं, हाईपरटेंशन एक कॉमन रोग हो गया है। रोज सैकड़ों की जान हार्ट अटैक से चली जाती है।

□ क्यों हो रहा है यह सब ? कौन है इसके मूल में ? किसी भी तरफ से सोचिये। अन्त में जाकर एक ही जगह रुकते हैं वह है मन। मन की चंचलता। इस सबका कारण वही है। क्या है मन ? विचारों का गट्ठर, जो सुपरसॉनिक वायुयान से भी लाखों गुना तीव्र गति से चलता है, पलक झपकते ही सात समन्दर पार चला जाता है। कहीं चोरी कराता है, कहीं झूठ बुलवाता है तो कहीं धोखाधड़ी और फरेब के लिए प्रेरित करता है। आदमी को चिढ़ाता है देख, तेरे पास कार नहीं है। कुढ़ाता है देख, तू किराये के मकान में ही सड़ जायेगा। अरे अरे तेरे, कपड़े तो उसके कपड़ों के सामने कुछ भी नहीं हैं।

तो क्या मन पहले नहीं था। सैकड़ों हज़ारों वर्ष पूर्व तो इतना चंचल नहीं था, इतना परेशान नहीं करता था। उस समय न इतनी अशान्ति थी, और न अज्ञात भय। न ब्लड प्रेशर था और न हाइपरटेंशन। तो फिर अभी मन की स्थिति में क्यूं यह परिवर्तन हुआ। वस्तुतः बीसवीं सदी की भौतिकवादी सभ्यता और उसके साधनों ने मन की स्थिति को बहुत प्रभावित किया है। रेडियो, टी. वी., स्कूटर, कार, बंगला, विदेश यात्रा—ये सब मिलकर मन को परेशान किये रहते हैं, आकर्षित करते रहते हैं। इस प्रकार जैसे-२ आर्थिक विकास होता गया, मशीनी विकास होता गया, औद्योगिक उत्पादन बढ़ते गये, यातायात के साधनों ने पश्चिम को नज़दीक कर दिया और हमारा घेराव भौतिकवादी साधन एवं संस्कृति के द्वारा बढ़ता गया—यह मन चंचल होता गया, सारी अशान्ति और दुःखों का मूल बनता गया।

जैसे-२ मन प्रबल होता गया, मन एवं बुद्धि का संघर्ष बढ़ता गया। आत्मा के तीन प्रमुख अंग हैं—मन, बुद्धि एवं संस्कार। मन इच्छाओं का बंडल है। ऐसी इच्छाएं जिनका कोई अन्त नहीं। और बुद्धि उन पर अंकुश है, जो सही, गलत का निर्णय कर मन पर कंट्रोल करती है, उसे काबू में लाती है। स्वाभाविक है कभी एक प्रबल होता है तो कभी दूसरा। जब बुद्धि प्रबल होती है तो सत्कार्य होते हैं, मानवता की भलाई के कार्य होते हैं। जब मन प्रबल होता है तो स्वार्थ प्रेरित और बुरे कर्म किये जाते हैं। इन कार्यों की छाप परमाणु रूप में आत्मा से जुड़ जाती है जिसे हम संस्कार कहते हैं। जब हम देखते हैं कि कोई अच्छे कार्य करते हुए भी कई प्रकार के दुख पा रहा है या सारे गौरख धंधे और बुरे कार्य करने के बावजूद भी गुलछर्रे उड़ा रहा है तो कहते हैं संस्कार की बात है। जब तक वे संस्कार पूरी तरह साफ नहीं हो जाते, आत्मा को उस फल भोगने वाली स्थिति में होकर गुजरना पड़ता है। इस प्रकार किसी को पीड़ित करने में ईश्वरीय सत्ता का कोई हाथ नहीं। सोचने की बात है जो ईश्वर, आनन्द का सागर है, शान्ति का सागर है, ज्ञान का सागर है, दया का सागर है क्या वह निर्दय होकर किसी को सता सकता है ? क्या वह

किसी पर आघात कर सकता है। नहीं, वस्तुतः यह सब उन कर्म परमाणुओं का परिणाम है जो आत्मा से जुड़े रहते हैं।

जैन सिद्धान्त भी मानता है कि शरीर, मन या वचन से जो क्रियायें की जाती हैं उनका कर्म परमाणु आत्मा के पास खिच आता है। इस क्रिया को आस्त्रव कहते हैं। आस्त्रव क्रिया से आये कर्म-रूपी द्रव्य के आत्मा से संलगन हो जाने को बंध कहते हैं। फिर आती हैं संवर एवं निर्जरा क्रिया जिनमें अच्छे कर्मों एवं तपयोग द्वारा आत्मा से संलग्न कर्म परमाणुओं को दूर करने का प्रयास चलता है।

□मानव और दानव क्या हैं? ये और कुछ नहीं, बुद्धि एवं मन के परिणामों की प्रतीतात्मक स्थितियां हैं। मन दानव का जनक है तो बुद्धि मानव की। दोनों आत्मा की शक्तियाँ हैं। दोनों ही स्वाभाविक रूप से मनुष्य में विद्यमान हैं। प्राकृतिक रूप में दोनों सन्तुलन की स्थिति में हैं। तुला की सीधी डंडी हैं और तुला की सीधी डंडी का नाम ही मनुष्य है। जब कोई मनुष्य अपने सभी कार्यों को बुद्धिगम्य बनाता है, अपने में मानवोचित गुणों का विकास करता है तो वह औसत मानव से ऊंचा होता है। ताराजू का पलडा उधर झुक जाता है। अगर विकास की यह प्रवृति क्रमशः बढ़ती जाती है तो वह क्रमशः मानव से महामानव, महात्मा और देव आत्मा होता जाता है। गांधी, ईसा, राम—इन सब में मानवोचित गुणों की ही तो पराकाष्ठा थी। इसके विपरीत अगर मन प्रबल हो तो बुद्धि मरती जाती है, निर्णय शक्ति शनैः शनैः खतम होती जाती है। चंचल मन उस व्यक्ति को स्वार्थी बनाता जाता है। स्वार्थ में अंधा वह व्यक्ति अपने को काम, क्रोध, लोभ, मोह व अहंकार की प्रवृत्तियों में डुबो लेता है। पर-पीड़ा में उसे आनन्द आने लगता है। यही तो है दानव।

□दुख के कारण भौतिकवादी साधन नहीं, वरन उनके प्रति लालसा है, लगाव है। जितना ज्यादा लगाव, जितनी मात्रा में लालसा, उसी अनुपात में ज्यादा दुःख। और यह लालसा कौन पैदा करता है? मन। यह ठीक है कि मनुष्य ने अपनी कार्य क्षमता को बढ़ाने, दूरी को घटाने, समय को बचाने या ठंड तथा गर्मी के प्रकोपों से अपने को सुरक्षित रखने के लिए अनेक प्रकार के साधनों की रचना की है। परन्तु बेहतर यह है कि उनको साधन के रूप मे ही लिया जावे, साध्य के रूप में नहीं। उनका यथा सम्भव प्रयोग किया जावे परन्तु तटस्थ भाव से। हम कूलर में रहें, पंखा चलायें, मोटर में सफ़र करें—कोई बुराई नहीं है। परन्तु अगर ये साधन उपलब्ध नहीं हैं तो इनके लिए छटपटायें नहीं, व्याकुल नहीं हों। दूसरे शब्दों में हम इनका प्रयोग करें परन्तु आन्तरिक विरक्ति रखते हुए। हम इन्टरनल डिटैचमेंट (Internal detachment) का भाव विकसित करें। अगर वैसी स्थिति हो जाती है तो इनकी उपलब्धि तथा अभाव दोनों में ही सम भाव रहेगा। दुःख पास नहीं फटकेगा। कहते हैं जनक, राजा होते हुए भी योगी थे, विदेह थे। इससे तात्पर्य ही यह है कि उन्होंने आन्तरिक विरक्ति इतनी विकसित कर ली थी कि वे अभाव एवं उपलब्धि दोनों ही स्थितियों में समान थे। यही है सच्चा वैराग जो योगियों में ही मिलता है। इस स्थिति तक पहुंचने के लिए जरूरी है कि लगाव या लालसा को खतम किया जावे और वह तभी सम्भव है जब मन पर पूर्ण नियन्त्रण हो।

त्याग का मतलब भी यही है। जो लोग सोचते हैं कि त्याग का मतलब है घर का त्याग, कपड़ों का त्याग, भोजन का त्याग या समाज का त्याग—वे भ्रम में हैं। और यही भ्रम उन्हें भटकाता रहता है। एक कहानी है, एक थे साधू बाबा, बस्ती से दूर, नंग धड़ंग शरीर। बड़ा शोर। घर बार, बस्ती समाज, वस्त्र भोजन सब त्याग दिया है। धनी पर बैठते हैं। सम्पत्ति के नाम पर केवल एक कमडण्ल और एक चिमटा। बड़ा गर्व अपने त्याग पर। एक दिन शंकर पार्वती के साथ उधर

से गुजरे। सोचा बाबा की परीक्षा ली जावे। सो साधारण आदमी का रूप बनाया और लेकर चलने लगे उनका कमण्डल। बाबा ने देखा कि कमण्डल उठा रहा है, सो उठाया चिमटा और धुनाई शुरू कर दी। इतनी ज्यादा आसक्ति उस धातु के बर्तन पर। सो ऐसा त्याग, त्याग नहीं, निरा ढोंग है। मन का भ्रम है। सच्चा त्याग तो इन्टरनल डिटैच-मेंट ही है। हमारी गीता का सार भी यही है। निःस्वार्थ कर्म किये जाओ, कभी दुःख नहीं होगा। यह तभी सम्भव है जबकि आन्तरिक विरक्ति का भाव उत्पन्न हो।

निष्कर्ष यह निकला कि सारी समस्याओं की जड़ यह मन है। यह तो पता चल गया कि सुख और शान्ति के लिए इस पर काबू बहुत जरूरी है, पर हो कैसे ? इसके लिए व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास जरूरी है। बल्कि यह कहा जावे कि यही मात्र रास्ता है। जब तक हमें अपने वास्तविक स्वरूप का ज्ञान नहीं होगा कि मैं कौन हूं, किसलिए आया हूं, मेरा वास्तविक स्वरूप क्या है तब तक न तो मन पर नियंत्रण सम्भव है और न आन्तरिक विरक्ति। और इसके लिए एक ही रास्ता है वह है राजयोग का, ध्यान का। पंतजलि ने सतचित्त आनन्द की स्थिति के लिए राजयोग को आधार-भूत बताया है।

□योग क्या है ? वैसे तो अनेक लोगों ने भिन्न-२ प्रकार से योग की व्याख्या की है परन्तु सीधे-२ कहा जा सकता है योग का अर्थ है जोड़ या संयोग। और उस संयोग के दो तत्व हैं—आत्मा तथा परमात्मा। इस प्रकार आत्मा और परमात्मा के संयोग को ही योग कहा जा सकता है। चित्त की वृत्तियों के निरोध को जो योग कहा गया है उसका तात्पर्य भी परोक्ष रूप से आत्मा का परमात्मा से संयोग ही है। इस देह को भूल स्वयं को आत्मा निश्चय कर परमात्मा की स्मृति ही योग है। वह आत्मा जो ज्ञान स्वरूप है, शान्त स्वरूप है, आनन्द स्वरूप है। परमात्मा के भी तो यही लक्षण हैं अन्तर केवल मात्रा का है, डिग्री का है। अतः विकल्प रहित शुद्ध आत्मा परमात्मा से स्वतः ही जुड़ती जाती है।

यह संयोग कैसे हो, किस विधि से हो, किस मार्ग पर चलें ? बहुत सारे आश्रम हैं, अनेक गुरू हैं। कोई स्पर्श मात्र से कुंडलिनि जागृत करता है तो कोई संभोग से समाधि की व्यवस्था देता है। कोई भभूत और शहद की वर्षा करता है तो ट्रांस-डैंटल सिस्टम प्रतिपादित करता है। योगियों में गुरुओं में चमत्कार प्रदर्शन की होड़ लगी है। क्षण भर के लिए हम चकाचौंध हो जाते हैं। कई बार थोड़े समय सुखकारी भी लगता है। पर यह सब क्षणिक है। चमत्कार रूपी बल्ब थोड़ी देर को चमका, हमें धोखा दिया, फिर वही अंधेरा, अव-रूद्ध मार्ग, फिर वही भटकाव। हमें क्षण भर की चकचौंध नहीं चाहिए, हमें मार्ग चाहिए, योग चाहिए। तड़फती आत्मा का परमात्मा से संयोग चाहिए। चेतना वाले आदमी हैं ना, पहले हम संतुष्ट हों, तभी तो उस मार्ग पर चलें। गुरू बताते हैं ध्यान करो। कैसे करें, क्यूं करें, पहले आधार-भूत ज्ञान भी तो हो।

मुझे अकुलाहट है यह जानने की कि मैं कौन हूं, आत्मा क्या है, उसका निवास कहां है, उसका स्वरूप क्या है, आत्माएं साकार, लोक में क्यूं आती हैं ? उस सत्ता, जिसे हम परमात्मा कहते हैं के क्या लक्षण हैं ? कहां रहता हैं परमात्मा ? आत्मा और परमात्मा के क्या सम्बन्ध हैं ? आत्मा और परमात्मा में क्या साम्य है ? राजयोग का आधार क्या है ? विधि क्या है ? विभिन्न अवस्थाएं क्या हैं ? दिव्य गुण क्या हैं, इन्हें धारण करने से किस प्रकार देवत्व की स्थिति प्राप्त होती है ? राजयोग द्वारा विकारों पर कैसे विजय प्राप्त की जा सकती है ? राजयोग द्वारा किस प्रकार अष्ट शक्तियां प्राप्त होती हैं ? कर्म क्या है ? मन बुद्धि और संस्कार रूपी आत्मा के तीनों शक्तियों का कर्मों से क्या सम्बन्ध है ? पुनर्जन्म और कर्मों की गुह्य गति क्या है ? दिव्य

गुणों को धारण कर ईश्वरीय सेवा कैसे की जा सकती है ?

यह सारा ज्ञान आध्यात्मिक विकास के लिए आधारभूत है जो इस मार्ग पर चलने वाले को होना ही चाहिए। जिज्ञासु जगह-जगह भटकता है, अनेक गुरुओं के चरण स्पर्श करता है परन्तु इस दिशा में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा किये जा रहे प्रयास निश्चय ही अद्भुत हैं, अद्वितीय हैं, अनुकरणीय हैं। आत्मा एवं परमात्मा के ज्ञान के प्रसार के लिए सुव्यवस्थित पाठ्यक्रम एवं उसके प्रेषण की व्यवस्था जैसी यहाँ मिलती है वैसी कहीं भी नहीं। पाठ्यक्रम अनेक अध्यायों में विभक्त है जिसे सुयोग्य ब्रह्माकुमार एवं ब्रह्माकुमारी शिक्षकों द्वारा पढ़ाया जाता है। और एक बार ज्ञान की यह पृष्ठभूमि बन जाने पर विद्यार्थी को स्वयं यह महसूस होने लगता है कि अब उसे भटकने की जरूरत नहीं है। राजयोग के रूप में उसे मार्ग मिल जाता है जिस पर जीवन पर्यन्त चल कर न केवल वह अपने में दिव्य गुणों का विकास करता है वरन मानवोचित कर्तव्यों का पालन कर एक आदर्श जिन्दगी जीता है जहाँ न अशान्ति है, न व्याकुलता। न छठपटाहट है न मानसिक तनाव। और परमसत्ता शिव बाबा के संयोग से जिस आनन्द की अनुभूति में वह मगन रहता है उसे शब्दों में व्यक्त करना असम्भव है।

★

माउण्ट आबू में यूनिवर्सल पीस पार्क

माउण्ट आबू—१० अप्रैल, आल इण्डिया कांग्रेस आई की जनरल सेक्रेट्री बहन राजेन्द्र कुमारी बाजपेयी, राजस्थान के मुख्य मंत्री भ्राता शिवचरण माथुर जी राजस्थान के स्वास्थ्य मंत्री भ्राता के० एस० राठौर जी, राजस्थान कांग्रेस कमेटी के प्रैज़ीडेन्ट भ्राता नवल किशोर चन्द जी तथा दो अन्य डिप्टी मिनिस्टर एवं सिरोही जिले के कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति निमन्त्रण पर "ओम-शान्ति भवन" में पधारे। सर्व प्रथम ओमशान्ति भवन के स्वागत कक्ष में दादी जी, दीदी जी, दादी जानकी जी तथा अन्य भाई बहनों द्वारा आप सबका स्वागत किया गया। ओमशान्ति भवन में बाबा का कमरा, विदेशी कलाओं का कमरा, स्वर्ग और योग प्रदर्शनी का अवलोकन करने के पश्चात आप सभी युनिवर्सल पीस हाल में पहुंचे जहां ३ हजार सफेद वस्त्रधारी राजयोगी भाई बहने योग के वायब्रेशन से हाल की शोभा बढ़ा रहे थे। सबसे पहले ब्रह्माकुमार निर्वैर जी ने सभी का परिचय कराया तथा विद्यालय की गतिविधियों पर प्रकाश डाला फिर दादी जी ने आमन्त्रित मेहमानों का विशेष स्वागत किया। बहन राजेन्द कुमारी बाजपेयी ने कहा—कि देश के निर्माण के कार्य में मातायें बहुत कार्य कर सकती हैं और यहां माताओं को देखकर मुझे बहुत खुशी हुई है। मातायें जैसे चाहें वैसे मोड़ सकती हैं, शान्ति के क्षेत्र में यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय कार्य कर रहा है, चरित्र का निर्माण कर रहा है, अति हर्ष की बात है। यहाँ जो राजयोग सिखाया जाता है वह भी शान्ति की स्थापना के कार्य में बहुत मद्दगार है। उन्होंने कहा कि सारा विश्व वर्तमान समय अग्नि अस्त्र बनाने की होड़ में लगा हुआ है। मैं यहां आकर बहुत प्रसन्न हुई हूं। राजयोग को मैं और जानने की कोशिश करूंगी।" राजस्थान के मुख्य मंत्री भ्राता शिवचरण माथुर जी ने कहा कि आबू एक ऐसा पर्वत है जिसकी छटा अन्य पर्वतों से न्यारी है। यहां अन्य पर्वतों जैसा वातावरण नहीं है. यह तपोभूमि है। ओमशान्ति भवन में आकर मेरा आबू आना सार्थक हुआ। उन्होंने आबू में युनिवर्सल पीस पार्क बनाने की सैद्धान्तिक रूप से अपनी अनुमति दी और कहा कि यहां के सदस्यों एवं शान्ति पूर्ण वातावरण को देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं। तत्पश्चात विद्यालय की तरफ से सभी को ईश्वरीय सौगात भी भेंट की गई।

सम्बलपुर सेवा केन्द्र की ओर से बरगढ़ में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता जे० सी० पड्ढी कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० पार्वती, ब्र० कु० प्रेमानन्द तथा भ्राता एन० नायक खड़े हैं।

केन्झर गीता पाटशाला के वार्षिक उत्सव के अवसर पर कलक्टर तथा जिला मजिस्ट्रेट भ्राता एफ० बी० दास प्रवचन करते हुये।

नयागंज कानपुर सेवा केन्द्र द्वारा जिला सीतापुर मिश्रिति में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी में डी० एम० भ्राता वल्लभ प्रसाद जी, उनकी धर्मपत्नी चित्रों पर समझ रहें हैं। साथ में अन्य भाई-बहिन खड़े हैं।

कालेज स्कवेयर, कटक सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सर्वोदय आश्रम की प्रधान मां रमा देवी बीच में बैठे हैं, बायीं ओर भ्राता पी० के० पति, ओ० पी० एस० सी० सदस्य, भ्राता के० विश्वनाथन, वेटरनरी डायरेक्टर, भ्राता चन्द्रशेखर महापात्र, सम्पादक 'प्रजातंत्र' तथा दायीं ओर ब्र० कु० बहनें खड़ी हैं।

मंगल गान

(ब्र०कु० राम ऋषि शुक्ल, लखनऊ,)

अमृत वेले उठें नित्य हम अमृत पान करें।
नयी सृष्टि के नव प्रभात का हम जयगान करें।
मंगल-गान करें !

'हम आत्मा हैं'—ऐसी स्मृति में हम आंखें खोलें।
'शिव बाबा !'— यह मीठी वाणी हम मुख से बोलें।
निराकार शिव ज्योति-बिन्दु का हम आह्वान करें।
नयी सृष्टि के नव प्रभात का हम जयगान करें।
मंगल गान करे !

अमृत वेले परमात्मा से अनुपम योग लगे।
आत्मा में सब सदगुण आयें शुभ सौभाग्य जगे।
सद्गुणदाता शिव बाबा का हम गुणगान करें।
नयी सृष्टि के नव प्रभात का हम जयगान करें।
मंगल गान करें !

अमृत वेले परमात्मा का अनुपम ज्ञान मिले।
नयन तीसरा खुले आत्मा का मन-प्राण खिले।
दिव्य बुद्धि से दिनचर्या का दिव्य विधान करें।
नयी सृष्टि के नव प्रभात का हम जयगान करें।
मंगल-गान करें !

दिव्य पिता से ही जोड़ें हम अपने सब नाते।
मंगल मिलन मनायें उनसे हों मीठी बातें।
आत्म-स्मृति से नव जीवन का नव-निर्माण करें।
अमृत वेले उठें नित्य हम अमृत-पान करें।
नयी सृष्टि के नव प्रभात का हम जयगान करें।
मंगल गान करें !

(वक्त की पुकार, पृष्ठ १२ का शेष)

बदल लो। आज ज रूरत है देश रक्षक की ही नहीं बल्कि विश्व रक्षक की, जो कि एकता से ही संभव है। अब लोकलाज या सम्बन्ध निर्वाह का विशेष वक्त नहीं है, विशेष माताओं के लिए घूंघट उठा गांडीव सम्भालें तभी सहयोग से विश्व कल्याण सम्भव है।

वक्त ने मानवों का कुछ नहीं बिगाड़ा, न ही स्वयं के कारण वह बिगड़ा है हमने उसे बिगाड़ा है तो बनाना भी हमारा कार्य है। इससे स्वयं को भी लाभ होगा, दूसरों की भी। लेकिन बिना आध्यात्म के यह संभव नहीं।

"विश्व देखे तेरी तरफ–तू क्यों न देखो उसकी तरफ"

ब्र०कु० अंजु, मुज़फ़रपुर

प्रिय साथियो,

एक ओर जहां क्रोध की प्रचण्ड अग्नि अत्यन्त शक्तिशाली बाम्ब (Bombs), घातक अस्त्र (Weapons) बनाकर आकाश-पाताल और पृथ्वी पर अपना साम्राज्य का विस्तार करती जा रही है, दूसरी ओर विज्ञान (Science) जो सुखदायी चीज़ों की बोछार कर रहा है, खरीदने और सुख भोगने के कार्य ने गरीबों और अमीरों के बीच की खायी को गहरी बनने में पूर्ण प्रोत्साहन दे रहा है। तीसरी ओर परम्परा से चले आ रहे धर्म के जड़-जड़ीभूत अवस्था का बोलबाला है। ये तीनों पक्ष मानवीय मन को खींचतान में उलझा रहें हैं। पवित्रता, सुख और शान्ति जो मनुष्य का ईश्वरीय जन्म-सिद्ध अधिकार है, ईश्वर पिता के सुख शान्ति के सागर (Ocean of peace and happiness) होते हुए भी एक बूँद के दर्शन मात्र के लिए तरस रहे हैं। हरिजन वर्ग सामूहिक हत्या एवं उत्पीड़न का शिकार हो रहा है, मध्यम वर्ग बीच में पीसा जा रहा है, उच्च वर्ग शोषण कार्य कर रहा है। अहंकार और बदले की भावना की अग्नि के बीच मानवता झुलसती जा रही है, अनेक धर्म, मठ-पंथ एवं अंधश्रद्धा के आडंबरों में सत्य धर्म छुप गया है। मानव अज्ञान के अंधकार में विषय सागर में गोते खा रहा है। अत: आवश्यकता है, उन्हें सच्चे मार्ग दिखाने वालों की, उनके दिव्य नेत्र बनकर सही दृष्टिकोण को पहचान कराने वालों की। इसके लिए व्यापक कार्य-क्षमता वालों की आवश्यकता है। क्योंकि जहां एक ओर विश्व महाविनाश के कगार पर है सिर्फ बटन दबाने की देर है, दूसरी ओर दैवी साम्राज्य की स्थापना हेतु कलम लग चुकी है और कार्य स्वयं सृष्टि के रचयिता स्वयं परमात्मा शिव करा रहे हैं। उस ज्ञान सूर्य (Sun of Knowledge) के सुख-शान्ति दायिनी किरणों को विश्व की हर अशान्त-दुःखी आत्मा तक पहुंचाने की विशेष जिम्मेवारी आप युवा वर्ग पर है। या यूं कहें कि मास्टर ज्ञानसूर्य बनकर आपको ही ज्ञान का प्रकाश फैलाना है। तो बोलो जब एक सूर्य से सारे जगह प्रकाश फैलता है तो आज हम सभी सच्चे अर्थों में परमात्मा के बच्चे ज्ञानसूर्य बन चमकेंगे तो किसी प्रकार का अंधियारा रह सकता है? अत: यह सिर्फ मैं एक नहीं, स्वयं परमात्मा की आवाज़ है, आह्वान है, आपसे शुभ आश है कि विश्व की समस्त सुख-शान्ति की प्यासी आत्माओं के लिए आशा की किरण बनो!

आज जबकि विश्व एक नाजुक दौर से गुजर रहा है, आप युवावर्ग केवल विघटनकारी कार्यों में ही अपना अमूल्य जीवन नष्ट कर रहे हैं। याद रहे– Life is a godly gift. अत: विश्व के नव निर्माण कार्य में परमात्मा के इस निमंत्रण को स्वीकार करें और अपने एक-एक श्वास-संकल्प, कदम, बोल और कर्म को विश्वकल्याणकारी के बच्चे बन विश्व-कल्याणार्थ उपयोग में लायें जिससे आपका भी उद्धार होगा एवं विश्व का भी। याद रहे–**"मानव स्वयं का पूर्वज भी है और उत्तराधिकारी भी।** अत: आपके पद चिन्हों पर चलकर ही अगली पीढ़ी श्रेष्ठ बन सकेगी। यह उत्तरदायित्व आपका है। फिर इतनी जिम्मेदारी होते हुए भी हे मास्टर विश्व प्रवर्त्तक आप हाथ पर हाथ रखकर बैठे हो? नयी-नयी समस्यायें पैदा करने में अपनी शक्तियां गंवा रहे हो? विश्व को अपना परिवार मानकर, स्वयं को परमात्मा की सन्तान समझकर चलो तो आपकी शक्ति का सही उपयोग हो सकता है। इस दैहिक और मानसिक शक्ति में अध्यात्मिकता की शक्ति(Spiritual power) को जोड़ो तो आप शक्तियों के सागर बन जाओगे। आप एक जाति, एक राज्य सम्प्रदाय या एक विशेष राज्य या देश के लिए लड़ रहे हैं, तो दूसरों का नुकसान होना स्वाभाविक ही है।

अत: इस विश्व के नाजुक दौर में, न कि एक वर्ग, एक राज्य या एक पार्टी का नेता, बल्कि सारे विश्व के मालिक परमात्मा के इस निमंत्रण को स्वीकार कर शुभ कार्य में सहयोग दें। आप एक-एक जो अपार शक्ति के स्त्रोत हैं, विशाल कार्य कर सकते हैं। अपने लिए न सही, भावी पीढ़ी का ही ख्याल

करें, या अपने परमपिता का ही ख्याल करें जो आज आपके द्वार खड़ा सहयोग मांगने के लिए दरवाज़ा खटखटा रहे हैं। जबकि किसी विशेष व्यक्ति के निमंत्रण को हम विशेष महत्व देते हैं तो परमात्मा से विशेष कोई होगा क्या ? आप पद्मापद्म भाग्यशाली हो जो इस निमंत्रण पत्र को पाने का अवसर मिला। अतः कार्य पूरा करके भविष्य स्वर्णिम बनायें। आशा है इन विचारों से पूर्ण सहमत हो पथ परिवर्तन करके औरों को प्रदर्शित करेंगे।

—ओम शान्ति भवन का सन्देश—

आज रुहानी स्नेह भरा हर दिल ने गीत सुनाया।
ओम शान्ति भवन में शिव का झण्डा लहराया।

आबू की ऊंची चोटी से गूंज उठी आवाज है।
प्रेम शान्ति हर मन में भरने सजे यहां के साज है।
पवित्रता का सबक सिखाने पतित पावन शिव आया।
ओमशान्ति भवन में शिव का झण्डा लहराया।—(१)

शिव पिता ने आकर के यह गुलशन दिव्य बनाया।
विश्व परिवर्तन करने को सबका मन ललचाया।
शूल बने जो फूल बनाकर खुश्बू है फैलाया।
ओम शान्ति भवन में शिव का झण्डा लहराया।-(२)

मत सोचो यह है आडम्बर,
बदल जायेगा अवनी-अम्बर।
जिधर श्री भगवान साथ हैं,
दिखा सकेगा वही बदलकर।

विश्व परिवर्तन सफल यहीं से सबके मन में आया
ओम शान्ति भवन पर शिव का झण्डा लहराया।—(३)

जाति, धर्म व रंग भेद की, भाषा-भेद व देश-भेद की
हद की दीवारों को तोड़ा, बना दिया वृत्ति बेहद की।

आत्म ज्ञान से विश्व बन्धुत्व का सबको पाठ पढ़ाया।
ओम शान्ति भवन पर शिव का झण्डा लहराया।।—(४)

सासनी सेवा केन्द्र द्वारा रामलीला मैदान में आयोजित शान्ति सम्मेलन के अवसर पर मंच पर बैठे हैं (बाएं से) ब्र० कु० रमा, ब्र०कु० विमला, ब्र०कु० शीला, भूतपूर्व बाग़ी सरदार पंचमसिंह जी।

कपूरथला ज़िला जेल में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए एसिसटेंट टू डिप्टी कमिश्नर भ्राता रमिन्द्रसिंह जी। उनके दाईं ओर, पूर्व विधान सभा सदस्य भ्राता मिलखी राम रत्न जी और साथ में अन्य भाई-बहिन खड़े हैं।

सचित्र समाचार

कानपुर सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित लखना में ब्र०कु० नीलम बकेवर डिग्री कालेज के प्रिन्सीपल को चित्रों की व्याख्या देती हुई।

फतेहबाद (उ०प्र०) सेवा केन्द्र के वार्षिक कार्यक्रम के अवसर पर चित्र में भ्राता रूद्र प्रकाश श्रीवास्तव तथा अन्य भाई बहन दिखाई दे रहे हैं।

एकांकी

"पवित्रता की रक्षा"

ब्र० कु० सूरज कुमार, आबू

पात्र—

मुन्नी : एक कन्या, बी० ए० की विद्यार्थी
दीनानाथ : मुन्नी का पिता, (चिड़चिड़े स्वभाव का व्यक्ति)
ऊमा : मुन्नी की मां
सुरेश : मुन्नी का भाई

मुन्नी का अध्ययन कक्ष, एक मेज कुर्सी रक्खी है, दीवारों पर कुछ धार्मिक चित्र लगे हैं, लाल बल्ब के प्रकाश से कमरा शान्तिधाम की याद दिला रहा है। मज पर एक टेपरिकार्ड रक्खा है, गीत बज रहा है— "पवित्रता अपनाओ, अतीन्द्रिय सुख पाओ" गीत के बोल धीमी आवाज में वायुमंडल में फैल रहे हैं। मुन्नी कुर्सी पर योग की गहन अनुभूतियों में मग्न अवस्था में बैठी दिखाई दे रही है। चेहर पर अद्भुत तेज है। ऐसा आभास हो रहा है मानो पवित्रता स्वयं चैतन्य होकर मुन्नी के रूप पें तपस्या मग्न है, शाम के ७ बजे हैं।

मुन्नी : (स्वगत)—कितनी भाग्यशाली हूं मैं··· जब भगवान सृष्टि पर आये, तो मैंने भो उन्हें पहचाना और उनका हाथ पकड़ा। आहा ! मैं भी गोपी बन गई। ओह...जिसकी एक झलक पाने के लिए करोड़ों मनुष्य मन्दिरों, गुरुद्वारों और तीर्थ स्थानों में चक्कर लगा रहे हैं, वह परमात्मा स्वयं मुझे मिल गये !

(विमग्न अवस्था में) –बाबा.... मैं आपकी आज्ञा पर चलकर सम्पूर्ण पवित्र बनूँगो। इस पवित्रता के पथ से कोई भी मुझे हिला नहीं सकेगा। आहा !.... कितना आनन्द है इस पवित्रता में··· मैं विश्व में "पवित्र बनो, योगी बनो" का सन्देश फैलाऊँगी। वास्तव में, पवित्रता हो सुखों की कुँजी और सर्व गुणों की खान है। मैं प्राण देकर भो पवित्रता का व्रत निभाऊँगी।

दीनानाथ का प्रवेश—

उस शान्त वातावरण में दीनानाथ क्षण भर के लिए शान्त हो जाता है। मुन्नो भी कुछ बोल नहीं पाती। परन्तु दूसरे ही क्षण···

दीनानाथ : मुन्नो; तुम मान जाओ, तुम्हारी उम्रये ज्ञान-ध्यान की नहीं है। तुम पढ़ाई में मन लगाओ बेटी, ये तो हम बूढ़ों का काम है।

मुन्नी: (ध्यान भंग होता है) बैठो पिता जी।

दीनानाथ : (चारपाई पर बैठते हुए)···

मुन्नी : पिता जी, बुढ़ापा किसने देखा है। मुझे तो मेरे मन के मीत स्वयं मिल गये हैं, मुझे उनके साथ ईश्वरीय आनन्द लेने दो।

पिता जी, आप मुझे छोड़ दो···मैं तो प्रभु की हो चुकी हूँ, मैं अपना तन मन उसे ही अर्पण कर चुकी हूँ, अब मैं किसी मनुष्य पर अर्पण नहीं हो सकती।

दीनानाथ : क्या बड़ी २ बातें करती हो। भगवान के दर्शन तो बड़े-२ ऋषियों, मुनियों को भी नहीं हुए। जब से तुम ब्रह्माकुमारियों के पास गई, बस बड़ी बड़ी बातें करनी सीख गई। पढ़ाई लिखाई में तो ध्यान ही नहीं।

मुन्नी : पिता जी, मेरा हर वर्ष प्रथम नम्बर आता है। क्या आप भूल गये ? मैं ब्रह्माकुमारियों के पास जाकर सभी व्यसनों से बच गई। मेरी अन्य सखियों को तो देखो, फैशन और घूमने फिरने में दिन गँवा देती हैं और फेल होती हैं। आप को तो मेरे श्रेष्ठ चरित्र पर नाज़ होना चाहिए।

दीनानाथ : (मधुर शब्दों में)—मुन्नी बेटी, मैं कब तुमसे नाराज हूँ, मुझे खुशी है। कल विद्यालय में सभी तुम्हारा गुण गान कर रहे थे। परन्तु बेटी, दुनियादारी का भी तो ख्याल करना पड़ता है।

मुन्नी : पिताजी, दुनियादारी का ख्याल तो सारे मनुष्य ही कर रहे हैं परन्तु उनका हाल देखा क्या हो रहा है—रोज़ लड़ाई झगड़े। बच्चे, बुरे संग में बिगड़ रहे हैं।

दीनानाथ : मेरी मुन्नी, बहुत अच्छी हो बेटी, परन्तु अभी तेरी उम्र इस ज्ञान-ध्यान की कहाँ है। बेटी, तेरी अच्छे घर में शादी करेंगे और गृहस्थ आश्रम व्यतीत करके फिर ये ज्ञान ध्यान धारण करना।

उमा का प्रवेश –

उमा : अजी सुनते हो···

दीनानाथ : क्या बात है ?

उमा : वे फिर आये हैं

दीनानाथ : कौन...?

उमा : वे हो, मुन्नी की सगाई वाले, मुन्नी को देखने आये हैं। लड़का, उसकी माँ और बाप भी आया है। चलो, इनसे मिल तो लो।

दीनानाथ : अच्छा, तो वे आ गये। ये तो खुशी की बात है। मैं भी अपनी मुन्नी के हाथ पीले कर दूं। बस फिर चैन की नींद सोऊं। मुझे तो रात-दिन चिन्ता रहती है।

दीनानाथ : (सिर पर हाथ रखकर)—यही तो बस चिन्ता है। किसी तरह भगवान लाज रख ले। समाज का भी ख्याल करना पड़ता है।

उमा : अच्छा, चलो।

दीनानाथ : चलो, तुम उन्हें बैठाओ, पानी-वानी पिलाओ, मैं आता हूं

उमा का प्रस्थान—

दीनानाथ : मुन्नी, वे तीनों आ गये। तुमसे बातें करेंगे। वे कई बार आये, परन्तु मैं उन्हें टालता ही रहा। परन्तु आखिर तो काम करना ही है। बेटी, उन्हें अपने गुणों का रूप दिखाना।

मुन्नी : पिता जी, मैं आपसे कह चुकी हूं कि मैंने तो परमपिता परमात्मा का मन से वरण कर लिया है। मैं तो मन उसे दे चुकी हूं अब मैं किसी और का वरण नहीं कर सकती।

दीनानाथ : बेटी, तुम अभी बच्ची हो। बिना शादी तुम कैसे रहोगी। समाज हम पर अँगुली उठायेगा कि जवान लड़की घर में रक्खो है।

मुन्नी : परन्तु पिता जी, मन से प्रभु का वरण करने पर, किसी और का वरण करना क्या महा पाप नहीं होगा ?

दीनानाथ : (चिन्ता मुद्रा में) - मुन्नी, तुम बात तो ज्ञानियों जैसी करती हो। परन्तु मुझे तो समाज को भी देखना है।

मुन्नी : पिता जी, मैं मन में एक की छवि समा चुकी हूं। यह मेरा अन्तिम निर्णय है। मैं इसे बदल नहीं सकती।

दीनानाथ : (समझाते हुए) - बेटी, तुम अभी बच्ची हो। बिना शादी रहना अत्यन्त कठिन काम है और बिना सन्तान तो तुम्हारी मुक्ति भी नहीं होगी, शास्त्र भी यही कहते हैं।

मुन्नी : यह तो बड़ा सहजसाधन है मुक्ति का। फिर सन्यासी सन्तान को छोड़कर जंगल में जाकर मुक्ति के लिए तपस्या क्यों करते हैं ?

दीनानाथ : (आवेश में)—बस बड़ी-बड़ी बातें करनी सीखी है। चुप नहीं रहेगी। चल उठ, तैयार हो, मैं तीनों को लाता हूं।

मुन्नी : पिता जी, मैं किसी मनुष्य से शादी नहीं करूंगी।

दीनानाथ : (गुस्से में) तो फिर किस से शादी करेगी तुम·· बदनाम करेगी हमें···

मुन्नी : मैं कह चुकी हूं कि मैं भगवान का वरण कर चुकी हूं और उसकी श्री मत पर चल कर कुल दीपक बनकर तुम्हारा और तुम्हारे कुल का नाम रोशन करूंगी।

दीनानाथ : (अधिक क्रोध में)—भगवान, भगवान, बस एक ही रट···अब मुझे ज्यादा तंग न कर, मुन्नी। मुझे तेरी ही चिन्ता रात दिन रहती है, मैं तुझे ठिकाने लगा दूं फिर सुख की नींद सोऊँ···

मुन्नी : पिता जी, अगर मैं शादी न करूँ, तो इसमें किसी की क्या हानि है ?

दीनानाथ : (क्रोध में)—तुझे क्या पता। समाज को तो हमें मुँह दिखाना पड़ता है।

मुन्नी : समाज में कौन समझदार व्यक्ति नहीं होगा जो पवित्रता की सराहना न करे। सभी तो पवित्र

देवियों के पुजारी हैं। गीता भी काम महाशत्रु को जीतने की प्रेरणा देती है।

दीनानाथ : ज्ञान सुनाती है मुझे। तू मानेगी नहीं क्या, मुन्नी, क्यों रंग में भंग डालती हो। खुशी का दिन है, उठ तैयार हो।

मुन्नी : (दृढ़ता से)···अच्छा, अगर आप यही चाहते हैं तो लड़के से बात कर लो। अगर वह मेरे साथ पवित्र जीवन व्यतीत करने को तैयार हो, तो मैं शादी कर सकती हूं।

दीनानाथ : (गम्भीर मुद्रा में)—पवित्र जीवन, क्या हवाई किले बनाती है। उन ब्रह्माकुमारियों ने तुम्हें यही सिखाया है। शादी करके पवित्र जीवन कोई क्यों जियेगा, सभी तेरी तरह साधू हैं क्या।

मुन्नी : तब तो मैं शादी नहीं करूँगी। भगवान की आज्ञा है पवित्र बनो। बोलो, मैं आपकी मानूँ या भगवान की। एक ही बार तो वे आज्ञा करते हैं।

दीनानाथ: बड़ी जिद्दी लड़की है। कहाँ से पैदा हो गई। होते ही मर जाती तो कितना अच्छा होता।

सुरेश का प्रवेश—

सुरेश : पिता जी, वे इन्तज़ार कर रहे हैं।

दीनानाथ : (परेशान मुद्रा में)—परन्तु ये तो टस से मस नहीं होती। मैं क्या करूँ···

(सुरेश से) : तू जा अपनी माँ को बुला ला। वह ही इसे समझाए। लोग सुनेंगे तो यहाँ जमघट हो जाएगा। बड़ी बदनामी होगी।

(सुरेश का जाना व उमा के साथ आना)

दीनानाथ : (उमा से)—देख ये तेरी औलाद···आज मेरी नाक कटायेगी। घर में बैठे मेहमानों को मैं कैसे मुंह दिखाऊँ ?

उमा : क्या कहती है मुन्नी ?

दीनानाथ : कहती है, मैं तो शादी नहीं करूंगी।

उमा : (प्यार से) - चल उठ मुन्नी, मेरी बेटी ने आज तक कभी माँ की आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया।

मुन्नी : परन्तु मां, मैं तो भगवान से शादी कर चुकी हूं।

उमा: सुरेश, उठा इसे ले चल और तैयार करा। सुरेश, मुन्नी का हाथ पकड़ता है, आग्रह करता है, परन्तु मुन्नी अपने वचन पर अड़ी है।

उमा : (दीनानाथ से)—लगा इसके एक थप्पड़, पढ़ लिख कर भी नहीं कुछ सीखा। हम कितनी खुशामद कर रहे हैं। मानती ही नहीं। माँ बाप का भी नहीं मानती और किसका मानेगी।

दीनानाथ : (मुन्नी का हाथ पकड़कर) बोलो शादी करेगी ?

मुन्नी : नहीं।

दीनानाथ मुन्नी को क्रोध में एक थप्पड़ मारता है। सुरेश हट जाता है। मुन्नी के मुख से आवाज निकलती है····।

हे शिव बाबा, मेरी रक्षा करो।

दीनानाथ : (क्रोध में) कौन है ये तेरा बाबा, बुला उसे, मैं भी देखूँ (सुरेश से) ये डंडा दे ज़रा, ये ऐसे ही सीधी होगी।

दीनानाथ मुन्नी को डंडे से, पैरों पर व हाथों पर मारता है, परन्तु मुन्नी शान्त पड़ी रहती है।

दीनानाथ : (आवेश में) ये लड़की है कि क्या···

मुन्नी : तुम मुझे मार लो, परन्तु भगवान तुम्हें माफ़ नहीं करेगा।

दीनानाथ : भगवान···ले···एक डंडा और मारता है।

सुरेश : कन्या पर हाथ नहीं उठाओ, पिता जी,

मुन्नी : हे बाबा, अब तो मैं तुम्हारी शरण हूं···

उमा : (दीनानाथ से) इसे तब तक नहीं छोड़ो, जब तक ये हां न करे।

दीनानाथ : (जोर से) सब दरवाजे बन्द, करो। देखो कोई आये नहीं, मैं इसे सीधा करता हूं।

(मुन्नी से) बोल शादी करेगी।

मुन्नी : मैं अपना निर्णय कह चुकी···

दीनानाथ : (उत्तेजना में) तो यों ही हमने पढ़ाया लिखाया तुझे...(एक डंडा पैर पर मारता है)।

(हाथ सिर पर रख कर) मुझे क्या पता था कि ये दिन देखने पड़ेंगे।

सुरेश : (दीनानाथ का हाथ पकड़कर हटाता है)—छोड़ो, पिता जी, मुन्नी मान लेगी।

मुन्नी : (रोती हुई)—बाबा, अब सहा नहीं जाता। मुझे इस देह के बन्धन से छुड़ाकर अपने पास वतन में बुला लो।

दीनानाथ : (जोर से डंडे मारता है) —जा, अपने बाबा के पास, कहाँ है वह तेरा बाबा ···बुला उसे···।

सुरेश : (आंसू बहाते)—पिता जी, आप यह क्या कह रहे

हैं।

मुन्नी: (रोती हुई)—हे भगवान, तुम इन्हें माफ करना। ये ज्ञानहीन हैं, इन्हें दिव्य चक्षु देना।

दीनानाथ : (थप्पड़ मारता हुआ)—मुंह बन्द नहीं करती।

उमा : अब छोड़ो, चलो, आपे ही अकल आ जायेगी। अब चलो, मेहमानों को भोजन कराओ।

तीनों का प्रस्थान। दीनानाथ सिर पर हाथ मारता निकल जाता है।

(मुन्नी बेहोश हो गई।)

मुन्नी की आँख खुली प्रातः ४·० बजे। अब वह स्वयं को बहुत ताजा महसूस कर रही थी। मन से सभी स्मृतियाँ लोप हो चुकी थीं। वह पूर्णतया अशरीरी थी। शरीर पर चोट का उसे एहसास नहीं रह गया था। उसे आभास होने लगा--मानो उसे शिव बाबा बुला रहे हैं।

उसके कानों में आवाज़ गूंजने लगी

'बेटी, तुम मेरी सच्ची बच्ची हो। तुमने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए बहुत कष्ट सहा। अब तुम आओ मेरे पास। आओ बेटी, आओ, प्रेम का सागर बाप तुम्हारे लिए सुखों का झूला लिए इन्तजार कर रहा है।'

मुन्नी : (हर्ष भाव में) ओ बाबा मैं तो तुम्हारी हूं। अब मुझे ले चलो और अपनी बाहों में समा लो।

(मुन्नी जागृत अवस्था में आ जाती है)

(जोर से)—ओ मां ··माँ ·····सुरेश ·····सुरेश भैया···

उमा : (चौंक कर) · कौन, मुन्नी की आवाज़···

(दीनानाथ को जगाते हुए) उठो देखो, मुन्नी बुला रही है। शायद भगवान ने उसे सद्बुद्धि दे दी। चलो, चलो, उसके पास, सुरेश उठ···

(तीनों मुन्नी के पास जाते हैं···)

मुन्नी : (धीमे करुण स्वर में)···माँ तुम आ गई। पिता जी, प्रणाम,सुरेश भैया, तुम मुझे बहुत प्यारे थे। आपने मेरे जीवन में मेरी बहुत पालना की, उसके लिए मैं आपकी बहुत आभारी हूं।

उमा: बेटी, सगाई करोगी ना···देख, तेरे पप्पा ने सारी रात नींद नहीं की। बड़े बेचैन रहे।

मुन्नी : माँ जिससे मैंने शादी की अब मैं उसी के पास जा रही हूं।

दीनानाथ : (भरे स्वर में)···क्या कहा मुन्नी, समझा नहीं मैं · मेरी बुद्धि मारी गई ··

मुन्नी : पिता जी, अब मैं भगवान के पास जा रही हूं · भूलों के लिए आपसे क्षमा चाहती हूं।

दीनानाथ : (रोने लगता है) ··सच हमें यों ही तड़पता छोड़कर ··

मुन्नी : हाँ, अब तुम्हें समाज तो कुछ नहीं कहेगा और तुम सुख की नींद भी सो सकोगे।

उमा : (रोती हुई)···मुंह पर हाथ फेरते हुए··· क्या कह रही है मुन्नी, मेरी आँखों की ज्योति बेटी, मुझे बिलखता छोड़कर कहाँ जा रही हो।

मुन्नी : माँ, अब मेरा समय पूरा हो गया। मैं जान गई कि माँ बाप अपनी बेटी को पवित्र मार्ग से भी रोकते हैं।

(सुरेश से) मेरे प्यारे भैया, मलाल न करना, मैं पवित्रता की रक्षा के लिए प्राण दे रही हूं। सुरेश दौड़ कर मुन्नी से लिपट जाता है।

सुरेश : (बिलखते हुए) मेरे प्यार को छोड़कर तुम कहाँ जा रही हो मुन्नी।

मुन्नी : अब तो मेरे सच्चे प्रियतम का बुलावा है। वहाँ जाने से मुझे कोई नहीं रोक सकता। मेरी अन्त में तुमसे एक बिनती है···

सुरेश : कहो बहन, मैं आपकी अन्तिम इच्छा को प्राण देकर भी पूरा करूँगा।

मुन्नी : बस आश्रम पर जाना और दीदी से कहना "मुन्नी, शिव बाबा की याद में अपने पवित्रता के प्रण को पूरा करने के लिए प्राण तज गई" और हो सके तो तुम तीनों ईश्वरीय ज्ञान लेकर अपने जीवन को पावन बनाना।

मुन्नी के सिर को झटका लगा और वह उड़ चली वतन में अपने प्रियतम के पास

(तीनों का करुण रुदन)

हमारे बोल (पृष्ठ ५ का शेष)

की समालोचना करते हैं और अपने वचनों में दूसरों पर छींटा डालते हैं। हमें मालूम होना चाहिये कि अपने बारे में कोई बिरला ही व्यक्ति कटु-आलोचना अथवा तर्क-युक्त, यथार्थ परन्तु निषेधात्मक आलोचना सुन सकता है। अतः हमें आमन्त्रित हुए बिना ही आलोचना या विचार-प्राकट्य शुरू नहीं कर देना चाहिये। और, जब हम आलोचना, तुलना या मूल्यांकन करते भी हैं तो हमारी भावना परस्पर उन्नति ही की अथवा कार्य में अधिक कुशलता एवं सफलता लाने की होनी चाहिये। हमारे बोल दूसरे व्यक्ति को हताश परास्त, अपमानित या प्रताड़ित करने के अथवा बदला लेने के लिये नहीं होने चाहियें बल्कि रचनात्मक, हित-भावना से तथा स्वयं को सहयोग के लिये अर्पण करने के शुभ संकल्प से होने चाहियें।

१५. भाव-भंगिमा

बोलते समय हम अपने हाथों को जिस तरह हिलाते, जैसा चेहरा बनाते, किसी बात पर ताली बजाते, किसी बात को कहते समय आवाज़ को ऊंचा करते, पास बैठे व्यक्ति को आंखों से इशारा करते अथवा कोहनी मारते, दूसरे की बात पर भद्दे तरीके से हंस पड़ते, उसकी बात पर ध्यान ही न देते या उसे उड़ा देते या उसके प्रति अस्वीकृति का भाव अशिष्ट हरकत या वचन से व्यक्त करते हैं, वे सभी भी हमारे बोलों में गिने जाते हैं। हमारा रवय्या, हमारी भाव-भंगिमा बहुत बार हमारे वचनों से भी अधिक अभिव्यक्ति करते हैं। अतः मुख द्वारा न बोले गये परन्तु हमारे हाव-भाव या अंगान्यास द्वारा व्यक्त किये गये 'बोल' भी दिव्य मर्यादा से युक्त होने चाहियें। उनमें भी शालीनता, संयम तथा हित-भावना और प्रेम होना चाहिये।

१६. मौन

बहुत बार हमारा मौन, हमारी चुप्पी, हमारा मूक भाव भी बोलने का काम करता है। कभी तो चुप को लोग मौनं अर्ध सम्मति लक्षणम् (Silence is half-consent) मान लेते हैं और कभी नाराज़गी मानते हैं। कभी वे इसे हमारे मन में भय की उपस्थिति का सूचक समझते हैं तो कभी हमारे बारे में अलग एवं न्यारा रहने का बोधक मानते हैं। अतः जैसे हम अपने बोलों पर ध्यान देते हैं, वैसे ही हमें अपने मौन पर भी ध्यान देना चाहिये। हम से बड़े यदि हमसे बार-बार कोई बात पूछते हैं, और हम मौन रहते हैं तो यह एक प्रकार से उनका अपमान माना जाता है चाहे हमारे न बोलने का कारण हमारी अप्रसन्नता ही हो।

स्थानाभाव के कारण हम इसको यहीं समाप्त करते हुए इतना ही कहना चाहते हैं कि, हमारा मौन भी हमारे बोल का काम करता है और उसे भी हमें शब्दों की तरह मर्यादापूर्वक प्रयोग करना चाहिये।

—जगदीश चन्द्र

भ्राता सुरेश चन्द्र जी, भू० पू० चेयरमैन नगरपालिका, दादरी सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुये। साथ में ब्र० कु० कुसुम, सन्तोष तथा अन्य भाई-बहिन खड़े हैं।

आध्यात्मिक सेवा समाचार

ब्र० कु० श्रीराम, ब्र० कु० सत्यनारायण, कृष्णानगर,
दिल्ली द्वारा संकलित

करनाल सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहाँ पर राष्ट्रीय डेरी रिसर्च इंस्टीच्यूट की ओर से आयोजित त्रिदिवसीय कृषि मेले में तीन स्टाल लेकर राजयोग चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन राष्ट्रीय डेरी रिसर्च इंस्टीच्यूट के डायरेक्टर ने किया। स्टाफ सदस्यों, अनेक वैज्ञानिकों तथा विभिन्न प्रान्तों से आई हुई अनेकानेक आत्माओं सहित लगभग ८००० आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला। पुरस्कार निर्णायक मंडल द्वारा संस्था को द्वितीय पुरस्कार दिया गया।

अम्बाला छावनी सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि शाहबाद मारकंडा, बब्याल तथा रेलवे कालोनी आदि स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी, योगशिविर, प्रोजैक्टर शो तथा प्रवचन के कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनके द्वारा अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

कपूरथला सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि होली पर्व के अवसर पर ज़िला-जेल के अन्दर "चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी" का आयोजन किया गया। अन्त में जनरल असिसटेंट टू डिप्टी कमिश्नर भ्राता राजिन्द्र सिंह जी, जेल के डिप्टी सुपरिटेंडेंट सरदार ढिल्लों जी ने अपने-अपने भाषणों में संस्था के द्वारा किए जा रहे चारित्र-उत्थान के कार्य की सराहना की। लगभग २०० कैदियों ने इस प्रदर्शनी से लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त समीपवर्ती नंगला गाँव में भी एक दिन के लिए प्रदर्शनी तथा प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम रखा गया, जिसे पूरे गांव के लोगों ने देखा।

आगरा सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां पर लायन्स क्लब द्वारा आयोजित होली मेले में स्टाल लेकर प्रदर्शनी लगाई गई, जिसे लायन्स क्लब के सभी मेम्बरों सहित लगभग ५००० आत्माओं ने देखा। इसके अतिरिक्त एत्मादपुर तहसील के रामलीला मैदान में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी तथा राजयोग सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें प्रवचन तथा आध्यात्मिक नाटक भी प्रस्तुत किए गए।

किदवई नगर (कानपुर) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां पर मार्च मास में मनाए गए शिवरात्रि पर्व के अवसर पर घाटमपुर तथा नंदना गाँवों में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा प्रवचनों के कार्यक्रम आयोजित किए गए। इस बार आश्चर्यजनक बात यह हुई कि गाँव के लोगों ने भोलानाथ शिव के नाम पर अपने पास जो तम्बाकू की थैलियां, सिगरेट के पैकेट थे सभी दे दिए और सभी ने दिल से नशीली चीज़ों को छोड़ने की घोषणा की।

पाटन सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि कन्ट्रेक्टर डाह्या भाई की लौकिक माता जी के देह त्याग अवसर पर आध्यात्मिक प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया। पाटन आर्टस कालेज में भी प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया। इसके अतिरिक्त रूपपुर गाँव में विश्व नवनिर्माण राजयोग प्रदर्शनी तथा ग्राम सभा, महिला-सभा, बाल सभा का भी आयोजन किया।

गांधी नगर (गुजरात) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि निकटवर्ती येथापुर गाँव में आध्यात्मिक प्रदर्शनी, चैतन्य झांकी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया, जिनसे लगभग ३००० आत्माओं ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त सम्पर्क वाली आत्माओं का स्नेह मिलन रखा गया, जिसमें २०० आत्माएँ शामिल हुईं।

मणिनगर (अहमदाबाद) सेवा केन्द्र की ओर से

धोलका में "पाँच चैतन्य देवियों की झांकी", "विश्व नवनिर्माण प्रदर्शनी" तथा आध्यात्मिक सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिनसे लगभग ५००० आत्माओं ने लाभ उठाया।

नडियाड सेवा से समाचार प्राप्त हुआ है—उमरेड शहर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिनसे लगभग १००० आत्माओं ने लाभ उठाया इसके अतिरिक्त निकटवर्ती स्थानों पर शोभा यात्रा भी निकाली गई।

सिरसी सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि कर्नाटक के मुख्य मंत्री भ्राता रामकृष्ण हेगड़े से २० मिनट भेंट वार्ता हुई जिसमें उनको संस्था की गतिविधियों से अवगत कराया गया तथा "सर्व आत्माओं के पिता" का सजा सजाया चित्र सौगात में दिया गया।

तिरुपति सेवा केन्द्र की ओर से इन्टर-कालेज-भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसका विषय था "वर्तमान समय में आध्यात्मिक शिक्षा तथा ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता"। श्री-गोविंद राजास्वामी आर्ट कालेज के छात्र भ्राता एस० वेंकट नारायण ने प्रथम पुरस्कार जीता।

ऊँझा सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि यहां पर मोरारी बापू की रामायण परायण सप्ताह के अवसर पर संस्था को सात दिन के लिए एक स्टाल मिला, जिसमें आध्यात्मिक साहित्य के द्वारा आत्माओं को शिव संदेश दिया गया। इसके अतिरिक्त भाण्डू गाँव में भी राजयोग शिविर का आयोजन किया गया।

सतना सेवा केन्द्र की ओर से लोहभरा गांव में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे लगभग १००० आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला। अन्तिम दिन सार्वजनिक सभा में प्रवचन का भी कार्यक्रम रखा गया। लोहभरा की भाव विभोर आत्माओं के प्रबल अनुरोध पर गीता पाठशाला खोल दी गई है।

कटक सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि केन्झर में विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रवचन किए गए जिनके द्वारा अनेक आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला। केन्झर गीता पाठशाला का वार्षिक उत्सव भी धूमधाम से मनाया गया।

मेरठ सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि होली पर्व के उपलक्ष्य में २१ मार्च सायं को सेवा-केन्द्र पर स्नेह मिलन का आयोजन किया गया, जिसमें होली का आध्यात्मिक रहस्य बताया गया। इस अवसर पर कई विशिष्ट व्यक्ति उपस्थित हुए।

राजापार्क (जयपुर) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि वहाँ के प्रसिद्ध हाल रविन्द्र मंच पर दिव्य सांस्कृतिक संध्या का आयोजन किया गया जिसमें मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति नरेन्द्र मोहन कासलीवाल, कालेज शिक्षा निर्देशक शिवनाथ सिंह कपूर एवं गायत्री मोदी बहिन थीं। प्रवचनों द्वारा होली का आध्यत्मिक रहस्य तथा संस्था की गतिविधियों से अवगत कराया, इस कार्यक्रम से लगभग ६०० आत्माओं ने लाभ उठाया।

चांदनी चौक (दिल्ली) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि अखिल भारतीय नशावन्दी परिषद की ओर से आर्यसमाज सभा के दीवान हाल में आयोजित एक विशाल कार्यक्रम में ब्र० कु० बहिन ने ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग द्वारा कैसे मद्यपान एवं बुराइयों को छोड़ा जा सकता है इस विषय पर प्रवचन दिया। इसके अतिरिक्त सदर बाजार में प्रदर्शनी, प्रोजैक्टर शो एवं प्रवचन का कार्यक्रम तथा निगम रंगशाला में भी प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया।

बरीपदा सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि रैरंगपुर, जिला मयूरभंज में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे लगभग ६००० आत्माओं को ईश्वरीय संदेश मिला। साथ-साथ राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया।

सिद्धपुर सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि सर्वोदय संस्था के नेता डा० जोशी जी अपने परिवार सहित म्यूजियम देखने हेतू पधारे जो ज्ञान

की नई-नई बातों से बहुत प्रभावित हुए। समोड़ा विद्यापीठ में तीन दिन के लिए ज्ञान शिविर का आयोजन किया गया, जिससे काफी संख्या में विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने लाभ उठाया। इसके अतिरिक्त बिलिया एवं खरोड़ गांवों में भी प्रोजैक्टर शो के कार्यक्रम रखे गए।

नारायणगढ़ (नेपाल) सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि पशुपतिनाथ के मन्दिर में शिवदर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे लाखों को ईश्वरीय संदेश मिला। विश्व हिन्दू सम्मेलन के सदस्यों की हुई गोष्ठी में विश्व हिन्दू सम्मेलन के अध्यक्ष तथा नेपाल के भू० पू० प्रधान मंत्री ने यूनिवर्सल पीस कान्फ्रैंस के अपने-अपने अनुभव सुनाए। सेवाकेन्द्र पर भी विशिष्ट व्यक्तियों का स्नेह मिलन रखा गया।

सम्बलपुर सेवा केन्द्र की ओर से निकटवर्ती बरगड़ नामक स्थान पर तीन दिन के लिए प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी के पश्चात् तीन दिन तक योग-शिविर भी रखा गया, जिसके परिणाम स्वरूप लग-भग १०० आत्माएँ प्रतिदिन ज्ञान स्नान करने आते हैं।

पालम (दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से होली के अवसर पर स्नेह मिलन आयोजन किया गया जिसमें सभी वर्गों के लगभग २५० भाई-बहिनों ने भाग लिया। इसमें मुख्य अतिथि थे दिल्ली कैंट इलाके के एसिसटैंट कमिश्नर आफ पुलिस भ्राता करतार सिंह, जो कि संस्था के कार्य से बहुत प्रभावित हुए।

भरूच सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि विश्व नाटक के अन्तिम समय की सावधानी देने हेतू "विश्व नाटक पथ प्रदर्शनी" का कार्यक्रम रखा गया, जिसका उद्घाटन शहर के कलैक्टर भ्राता बलवन्त सिंह जी ने किया। सर्व आत्माओं के पिता की चैतन्य झांकी भी सजाई गई। पांच दिन में प्रदर्शनी से लगभग १०,००० आत्माओं ने लाभ उठाया।

फ़िरोजाबाद सेवा केन्द्र की ओर से सिरसागंज में होली के अवसर पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे काफ़ी संख्या में लोगों ने लाभ उठाया।

फतेहपुर सेवा केन्द्र की ओर से निकटर्ती गांवों जसराना, अग्निहोत्रीपुर, मंगलापुर, कुल्हरपुर, गोपालपुर, नेनपुर, नौगांव, द्वारिकापुर, हथगांव, महिनपुर आदि में प्रदर्शनी, प्रवचन, योगशिविर, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। खागा कस्बे में आयोजित मातृ सम्मेलन में भी प्रवचन हुआ, जिससे माताओं में बहुत जागृति आई। इसी कारण वहां चरित्र निर्माण प्रदर्शनी भी बहुत सफल रही, लगभग ८००० आत्माओं ने लाभ उठाया।

हुबली सेवा केन्द्र से समाचार प्राप्त हुआ है कि स्विटजरलैंड से ब्र० कु० अलमुत बहिन पहुंचने पर जिगलर बिल्डिंग के राजयोग भवन में, रोटरी कलब में, इनरव्हील कलब में, बैंकर कलब में प्रवचन के कार्यक्रम रखे गए, जिनमें काफी संख्या में आत्माओं ने खुशी से भाग लिया।

नयागंज (कानपुर) से समाचार प्राप्त हुआ है कि यू० पी० के प्रसिद्ध तीर्थस्थान मिश्रित (सीतापुर) में लगे विशाल मेले में ८०'×८०' के एरिया में एक विशाल प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका उद्घाटन जिलाधीश महोदय ने किया। उन्होंने माउन्ट आबू के अपने अनुभव के आधार पर बताया कि संस्था का कार्य बहुत सराहनीय है। मेले में एक दिन शोभा यात्रा भी निकाली गई। आर्य समाज वालों के विरोध के बावजूद भी प्रदर्शनी बहुत सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई और अन्त में विरोधियों को झुकना पड़ा। प्रदर्शनी से लगभग १०,००० आत्माओं ने लाभ उठाया, अनेक आत्माओं ने रजिस्टर में अपने-अपने अनुभव रुचि से लिखे। ●

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक बी 9/19 कृष्णनगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा संगम प्रिंटिंग सर्विस कं० शाहदरा दिल्ली-32 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70